चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

ज्येष्ठ-आषाढ़, युगाब्द 5127, जून 2025

ऑपरेशन सिंदूर

आतंकी ठिकानों पर अकल्पनीय प्रहार

मुजफ्फराबाद

कोटली

बहावलपुर

रावलकोट

चकस्वारी

नीलम घाटी

झेलम

चकवाल

सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत का ओजस्वी एवं प्रेरणास्पद वक्तव्य

भारत किसी से शत्रुता नहीं करता लेकिन यदि कोई दुस्साहस करता है तो भारत उसका मुंह तोड़ जवाब देने में कोई संकोच नहीं करता। पड़ोसी देशों के लिए भारत ने हमेशा एक बड़े भाई की भूमिका निभाई है। हमेशा जरूरत पड़ने पर मदद भी की है। इसके बावजूद यदि कोई भी पड़ोसी देश भारत को आंखें दिखाने का दुस्साहस करता है तो भारत अपनी सैन्य शक्ति और कूटनीति से उसका सही जवाब देने की क्षमता रखता है। भारत ने समूचे विश्व को मानवीय धर्म सिखाया है। हमेशा सभी प्राणियों के कल्याण की कामना की है और मानव धर्म के संरक्षण के लिए भारत की सदा प्रतिबद्धता रही है। इसके लिए शक्ति की आवश्यकता भी जरूरी होती है। यद्यपि भारत किसी से वैर नहीं रखता परंतु यदि कोई भारत के लिए अमंगल की कामना करता है, किसी आतंकी वारदात को अंजाम देता है, तो उसके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जानी, समय की मांग है।

आज दुनिया भारत की ताकत को देखकर उससे प्रभावित हो रही है। यह स्वभाविक है कि दुनिया तभी आपकी बात सुनती है, जब आप ताकतवर हैं और यदि आप शक्ति का प्रदर्शन नहीं करते हैं भीतरी कलह से घिरे हुए हैं तो दुश्मन आपकी इस कमजोरी का फायदा उठाने की कोशिश करता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पड़ोसी समय-समय पर विपरीत धाराओं में बहते हैं। फिर भी हम पूरी सहनशीलता से उनकी इन गतिविधियों को कुछ समय के लिए अनदेखा करते हैं। परंतु ऐसी ताकतों को समय आने पर सबक सिखाना जरूरी रहता है और इस बार की प्रतिक्रिया में दुनिया ने भारत की शक्ति, वैभव और एकजुटता को प्रत्यक्ष देखा है।

17 मई, 2025 जयपुर

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

मातृवन्दना

वर्ष: 33 अंक : 06 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश),
ज्येष्ठ-आषाढ़, कलियुगाब्द 5127, जून 2025

इस अंक में...

संपादकीय	ऑपरेशन सिंदूर सेना का अप्रतिम शौर्य	5
चिन्तन	कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था एवं...	6
प्रेरक प्रसंग	पारस पत्थर	7
आवरण	भारतीय नारी शक्ति का अद्भुत पराक्रम.	8
महिला जगत्	शी हाट-आत्मनिर्भर हिमाचली महिलाओं...	13
संगठनम्	केवल कुशल शासिका ही नहीं...	14
देवभूमि	हिमाचल के युवाओं की बड़ी उपलब्धि...	17
दृष्टि	कृतिका शर्मा ने फतह की माउंट एवरेस्ट...	18
नवाचार	देश का आईटी हब बनेगा हिमाचल...	19
कुटुम्ब प्रबोधन	सामाजिक संरचना में परिवार...	21
विविध	सनातन हिन्दू धर्म एवं भारत में...	22
देश प्रदेश	अबूझमाड़ एनकाउंटर में एक करोड़...	24
पुण्य स्मरण	महापुरूषों का जीवन चरित्र ही समाज...	25
युवा पथ	हिमाचल के शब्द गौतम बने एकमात्र लिबरो	26
घूमती कलम	आतंकवाद पर ओवैसी का सख्त रूख	27
पर्यावरण	जल प्रदूषण और हम...	28
समसामयिकी	शस्त्र और शास्त्र, दोनों धरातलों पर...	29
प्रतिक्रिया	.... और खेल हो गया	30
कृषि	स्मार्ट खेती खोलती किसान के बेहतर...	31
काव्य जगत्	ऑपरेशन सिंदूर - भारत मां का प्रतिशोध	32
स्वास्थ्य	गर्मी में शरीर रहेगा शीतल...	33
विश्व दर्शन	सनातन ज्ञान को मिली वैश्विक मान्यता	34
बाल जगत्	सच्ची दोस्ती का उपहार	35

परामर्श

डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा
98050 36545

सह सम्पादक

डॉ. कर्म सिंह

सम्पादक मण्डल

डॉ. उमेश मौदगिल, डॉ. जय कर्ण,
डॉ. सपना चंदेल, हितेन्द्र शर्मा

आवरण व अक्षर संयोजन

राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख

नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक

कमल सिंह सेन

कार्यालय

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹ 15
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना :

पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

अमृत वचन

**वही रंगमंच है जो युग की राजनीति, धर्म, नीति, सन्धि,
करुणा, त्रिवर्ग की समालोचना में समर्थ हो**

-----भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

पाठकीय...

अबकी बार आतंक पर प्रहार

पूरी दुनिया में एक ही देश है- कुत्ते जैसी शक्ल का और स्वभाव में भी कुछ ऐसा ही दिखता है जिसने पैदा होते ही आतंक को अपना लिया और तब से लेकर अब तक आतंकवादियों के ट्रेनिंग सेंटर चलाना ही उसका एकमात्र मकसद है। कभी जिहाद, कभी कट्टरपंथी तो कभी आतंकी वारदात उसके ऐसे हथियार हैं जिन्हें पालने का शौक वह भीख मांग कर भी पूरा करता है। भले ही आवाम रोटी कपड़ा, मकान, पानी, राशन के लिए त्राहि-त्राहि करता रहे परंतु उसके कर्नल जरनैल झूठी शानोशौकत बनाए रखने के लिए प्लॉट अपने नाम कर लेते हैं और अपने परिवार और बच्चों को विदेशों में रखना, पढाना,अय्याशी की जिंदगी गुजारना तथा गरीब बच्चों को मजहब के नाम पर कुर्बान होने के लिए तैयार करना, उनका पुराना शौक है। जन्नत में हूरों के ख्वाब दिखला कर नौजवानों को बरगलाना और भारत की सरहदों पर अमन चैन न होने देना ही उनके जीवन का मकसद है । जिन्हें बचपन से ही हत्या ओर आतंक घुट्टी में पिलाया जाता है उनसे इंसानियत की उम्मीद रखना कतई ठीक नहीं कहा जा सकता है। वह पहले औरों के साथ लड़ते हैं और जब कोई दूसरा लड़ने के लिए नहीं मिलता है तो फिर आपस में ही लड़ मारकर खप जाते हैं, भले ही देश बर्बाद ही क्यों न हो जाए।

पाकिस्तान ने जब भी हिंदुस्तान के साथ युद्ध किया, बुरी तरह से उसकी हार होती रही है। इस बार भी भारत की सेना ने अपना ऐसा दमखम दिखाया कि पाकिस्तान चार दिनों में ही घुटनों पर आ गया और सीजफायर की भीख मांगने लगा। नये भारत के मुखिया नरेंद्र मोदी ने आतंकवादी ठिकानों का सफाया करने के बाद जिस तरह से पाकिस्तान की नाकेबंदी की है, वह तारीफ के काबिल है।

भले ही पाकिस्तान विश्व बैंक से लोन लेकर आतंकियों को पालता रहे और मजहब के नाम पर कट्टरपंथ की खेती करता रहे, युद्ध के लिए हथियारी इकट्ठा करता रहे परंतु आतंकवादियों के दम पर और चीनी हथियारों के बल पर वह भारत को कभी शिकस्त नहीं दे पाएगा। इस बार भारत में पहले आतंकी ठिकानों पर जोरदार हमला किया और उसके बाद देश के भीतर तथा विदेशों में जाकर जिस तरह से भारत को आतंकवाद से पीड़ित दिखलाते हुए राष्ट्र की रक्षा के लिए बदला लेने की बात का प्रचार किया गया है उसे विश्व समुदाय में भारत की छवि में और अधिक उछाल आया है। भारत की अर्थनीति भी निरंतर आगे बढ़ती हुई नजर आ रही है। भारत में बने हथियार जब पाकिस्तान की आतंकवादी फैक्ट्री को निशाना बनाकर प्रयोग में लाए गए तो उनकी सफलता ने विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा है। अब भारत में बनाए जा रहे रक्षा उपकरणों, हेलीकॉप्टर और मिसाइलों की खरीद के लिए दुनिया के अनेक देश जोरदार मांग करने लगे हैं। यह भारत की एक बहुत बड़ी जीत है, जिसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और एनडीए की सरकार को दिया जाना चाहिए। भारत की सेना ने जिस तरह आतंकवाद की सफाई के लिए सर्जिकल स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया है उस सेना के आगे यह कृतज्ञ राष्ट्र नतमस्तक है। भारतीयों को अपनी सेना और अपनी सरकार पर गर्व है और नए भारत का यह संकल्प भी है कि प्रत्येक आतंक की घटना को युद्ध माना जाएगा और इसका करारा जवाब दिया जाएगा। यह भी यह मजबूत एवं कठोर कदम भी प्रशंसा के सर्वथा योग्य है।

मातृवंदना तथा अन्य जागरण पत्रिकाओं द्वारा राष्ट्रवंदन के विभिन्न प्रकल्पों को जिस तरह से तेज धार दी जा रही है और सही तथा प्रामाणिक जानकारी पाठकों तक पहुंचाई जा रही है उसकी भी प्रशंसा अवश्य की जानी चाहिए।

प्रिंस शर्मा, हमीरपुर, हि.प्र.

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 **7650000990**

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को निर्जला एकादशी व विश्व योग दिवस एवं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस जून 2025

विश्व पर्यावरण दिवस	05 जून
निर्जला एकादशी	10 जून
बाल श्रम निषेध दिवस	12 जून
वट सावित्री व्रत	13 जून
विश्व रक्तदाता दिवस	14 जून
गायत्री जयंती	16 जून
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	21 जून
ज्येष्ठ पूर्णिमा	25 जून

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

संपादकीय

ऑप्रेशन सिंदूर सेना का अप्रतिम शौर्य

आतंकवाद अमानवीय कृत्यों का विकृत चेहरा है। यह आतंकवाद केवल भारत की पीड़ा नहीं अपितु समूचे विश्व के लिए चिंता का विषय बन चुका है। भारत के साथ सीधे दो युद्धों में तथा कारगिल युद्ध में करारी हार का सामना करने वाला पाकिस्तान अब अपने द्वारा पोषित एवं संरक्षित आतंकवादियों द्वारा छद्मयुद्ध से निरन्तर भारत को हानि पहुँचाना चाहता है। इतना ही नहीं, वह अपने धर्म और जिहाद के नाम पर भारतीय मुस्लमानों को तथा अन्य अल्पसंख्यक समुदायों को भी उकसाने की साजिश रच रहा है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण पहलगाम में घटी दुर्दान्त घटना है, जहाँ कश्मीर की सुन्दरवादियों को निहारने आये निहत्थे 26 पर्यटकों की एक-एक का धर्म पूछकर आतंकवादियों ने नृशंस हत्या कर डाली। यह अब तक की क्रूरतम वारदात थी। पाकिस्तान की इस नापाक हरकत का इन्तकाम भारत को लेना ही था। क्योंकि यह चोट शरीर तक सीमित न रह कर भारत की आत्मा तक पहुंच चुकी थी, तभी पूरा देश एक स्वर में पाकिस्तान से बदला लेने की बात कर रहा था।

हिन्दू-मुस्लिम तथा अन्य सभी धर्म सम्प्रदाय के भारतीय नागरिक एकजुट होकर पाकिस्तान को सबक सिखाने का आह्वान कर रहे थे। भारत सरकार ने भी तत्काल निर्णय लेते हुए बाघा-अटारी सीमा चौकी को बन्द कर दिया, सिन्धु जल सन्धि को स्थगित कर दिया गया तथा व्यापारिक, राजनैयिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को भी सीमित कर दिया गया, किन्तु देश इस इन्तजार में बैठा था कि कब पाकिस्तान के होश ठिकाने लाये जाते हैं। हिन्दुस्तान की जनता के हृदयों की पीड़ा तब शांत हुई, जब सफल सैन्य अभियान 'आप्रेशन सिंदूर' से पाकिस्तान में स्थित आतंकवादियों की शरणगाहों पर सटीक एवं भीषण प्रहार किया गया। आतंकवादियों को तैयार करने वाले कारखानों में से जैश के चार, लश्कर के तीन और हिजबुल के दो ठिकानों को पूर्णत: ध्वस्त कर दिया गया। पन्द्रह दिनों की प्रतीक्षा के बाद आधी रात में 25 मिनट में ही 24 मिसाइलों से सटीक हमला करते हुए भारतीय वायु सेना ने असीम शौर्य का प्रदर्शन किया। जिस अपने सिन्दूर को भारतीय नारियों ने अपनी आंखों के सामने उजड़ते देखा था, उसी सिन्दूर की शपथ लेकर भारतीय सेना ने सौ से अधिक आतंकवादियों को ढेर कर दिया।

पाकिस्तानी सरकार और सेना सकते में थी। पूरे विश्व में खबर फैल चुकी थी। शहबाज शरीफ और उनके सेनाध्यक्ष मुनीर तिलमिला उठे। परमाणु युद्ध की धमकियाँ पाकिस्तान द्वारा दी जाने लगी। साथ ही उसके सीमा पर ताबड़तोड़ गोलाबारी शुरू कर दी। दूसरी ओर सीमान्त क्षेत्रों के भारतीय शहरों पर मिसाईल और ड्रोन से हमला करने का प्रयास किया गया। भारतीय सेना के एयर डिफेंस ने लगभग सभी मिसाईल्ज और ड्रोन को आकाश में ही ध्वस्त कर दिया। बदले में भारत ने पाकिस्तान के कई एयरबस उजाड़ दिये । जब पाकिस्तान को यह अंदेशा हो गया कि भारतीय वायुसेना हमारे परमाणु ठिकानों को भी निशाना बना सकती है तो उसने युद्ध विराम की पहल की।

वास्तव में चार दिनों की लड़ाई में उसने घुटने टेक दिए थे। सैन्य अभियान ऑपरेशन सिन्दूर के जरिये, भारतीय वायु सेना द्वारा पाकिस्तान में घुसकर वहाँ स्थित आतंकी शिविरों को निशाना बनाना यही दर्शाता है कि नए भारत में आतंक का जवाब केवल शब्दों से नहीं अपितु ठोस और सटीक सैन्य कार्यवाही से दिया जायेगा और भविष्य में देश के भीतर होने वाली एक भी आतंकवादी घटना को भारत अपने विरुद्ध युद्ध ही मानेगा। इसका सीधा अर्थ यही है कि पाकिस्तान भविष्य में ऐसी आतंकी कार्रवाई के लिए सीधे भारत के साथ युद्ध के लिए तैयार रहे। बीते दिनों के घटनाक्रम ने यह प्रमाणित कर दिया है कि नया भारत एक है, सक्षम और सशक्त है।

हमारी सैन्य शक्ति केवल विदेशी हथियारों पर निर्भर नहीं। स्वदेशी हथियारों और तकनीक से भी वह युद्ध में विजयी हो सकती है। दो महिला सैन्य अधिकारियों द्वारा दी गई युद्ध की मीडिया ब्रिफिंग सांकेतिक रूप से सेना में नारी शक्ति की सहभागिता तथा देश में सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता की पुष्टि करती है। प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय सेना को पूर्ण सम्मान देते हुए उनके मनोबल को बढ़ाया है। पाकिस्तान को कड़ा संदेश दिया है कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते तथा टैरर और टॉक साथ नहीं चल सकते। सशक्त भारत के लिए हमें एकजुट होकर आगे बढ़ते रहना होगा और आतंकवाद को जड़ से समाप्त करना होगा।

कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था एवं ब्राह्मण समाज

चेतन कौशल नूरपुरी

धर्म और अधर्म – समय सूचक यंत्र की भांति समय वृत्त निरंतर घूम रहा है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। दिन के पश्चात् रात और रात के पश्चात् दिन का आगमन अवश्य होता है। विश्व में कभी धर्म का राज स्थापित होता है तो कभी अधर्म का। सृष्टि में सत्सनातन धर्म का होना नितांत आवश्यक है। असत्य, अधर्म, अन्याय और दुराचार को अधर्म पसंद करता है लेकिन धर्म नहीं। युद्ध चाहे राम – रावण का हो या महाभारत का, धर्म और अधर्म के महा युद्ध में जीत सदैव धर्म की होती है, अधर्म की नहीं।

मानव जाति का पतन और उत्थान – प्राणी जगत में जब एक ओर मनुष्य जाति के मानसिक विकार अपना उग्र रूप धारण करते हैं तो दूसरी ओर उसका बौद्धिक पतन भी अवश्य होता है। कामुकता वश नर के द्वारा स्थान – स्थान पर नारी जाति का अपहरण, बलात्कार, धर्मांतरण किया जाता है, उसका अपमान, शारीरिक – मानसिक शोषण होता है। इससे अब नर जाति भी अछूती नहीं रही है। मदिरा पान से नर – नारी अपना – पराया संबंध भूल जाते हैं। क्रोध में वह झगड़े, मारपीट, करते हैं। वह आतंकी, उग्रवादी, जिहादी बन जाते हैं। वह हिंसा, तोड़फोड़, अग्निकांड करते हैं। लोभ में वह चोरी, ठगी, तस्करी, धन गबन, घोटाले ही नहीं करते हैं, वह छल – कपट, षड्यंत्र भी करते हैं। मोह में वह अपना और अपनों का ही हित चाहते हैं, उससे संबंधित चेष्टायें करते हैं। अहंकार में वह दूसरों को तुच्छ और स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। संगत से भावना और भावना से विचार उत्पन्न होते हैं। विचारानुसार कर्म, कर्मानुसार निकलने वाला अच्छा और बुरा परिणाम उसका फल – मनुष्य की मानसिक प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। वह जैसा चाहता है, बन जाता है। पौष्टिक संतुलित भोजन से शरीर, श्रद्धा, प्रेम – भक्ति भाव से मन, स्वाध्यय से बुद्धि और भजन, समर्पण से उसकी आत्मा को बल मिलता है। इससे मनुष्य के पराक्रम, यश, मान और प्रतिष्ठा का वर्धन होता है। मनुष्य की आयु बढ़ती है। उसके लिए लोक – परलोक का मार्ग प्रशस्त होता है।

समर्थ सामाजिक वर्ण व्यवस्था – प्राचीन भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था, क्योंकि यह अपने समृद्ध संसाधनों, सत्सनातन धर्म, वैभवशाली संस्कृति और सम्पन्न अर्थ – व्यवस्था के कारण विश्व की सबसे धनी सभ्यताओं में से एक था। इसके पीछे सत्सनातन धर्म का रक्षण – पोषण, संवर्धन करने वाली आर्यवर्त मनीषियों की सर्व कल्याणकारी सोच थी जो कर्म आधारित व्यापक और सशक्त वैश्विक सत्सनातनी सामाजिक वर्ण – व्यवस्था के नाम से जानी गई है। इसके अनुसार मानव शरीर के चार अवयव प्रमुख माने गए हैं। मुख से ब्राह्मण, पेट से वैश्य, बाजुओं से क्षत्रिय और पैरों से शूद्र की उत्पत्ति मानी गई है। यह एक दूसरे के पूरक हैं। जिस प्रकार शरीर के चार अवयवों में से किसी एक अवयव के बिना अन्य अवयव का कभी पोषण, रक्षण नहीं हो सकता, उसी प्रकार समाज की वर्ण – व्यवस्था में जो उसके चार अभिन्न वर्ण विभाग हैं – एक दूसरे के पूरक, पोषक और रक्षक भी हैं।

सर्व व्यापक सामाजिक वर्ण – व्यवस्था आर्यवर्त काल से सुचारू रूप से चली आ रही है जिसके अंतर्गत वर्ण – व्यवस्था के चार वर्ण विभाग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण अपने – अपने गुण, संस्कार और स्वभाव के अनुसार सबके हित के लिए कर्म करते हुए सुख – शांति का माध्यम बनते थे। उससे राष्ट्र वैभव सम्पन्न और समृद्धशाली बना था। समय के थपेड़ों ने इस कर्म प्रधान वर्ण – व्यवस्था को जातियों में विभक्त कर दिया। उसने उसमें छुआ–छूत वाली गहरी खाई खोद दी है। उसकी मनचाही कहानी गढ़कर, उसे ठेस पहुंचाई है जो किसी नीच सोच का ही परिणाम है। समर्थ सामाजिक वर्ण – व्यवस्था कर्म आधारित, कर्म प्रधान थी, न कि जन्म आधारित या जाति आधारित। योग्य ब्राह्मण / आचार्य समाज में प्रतिभाओं की खोज एवं योग्य विद्यार्थी का चयन करते थे। वे प्रतिभाओं को अपना संरक्षण और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देते थे और उन प्रतिभाओं के जीवन में विद्यमान सर्व कलाओं का विकास करने में सहयोग करते थे। प्रतिभागियों के लिए वैदिक ज्ञान – विज्ञान की प्रतियोगिताओं का आयोजन करते थे। जीवन में आने वाले संकट, चुनौतियां, विपदाओं से निपटने हेतु विद्यार्थियों को आत्म – रक्षा हेतु तैयार करते थे। उन्हें वैदिक शिक्षण – प्रशिक्षण देकर समर्थवान बनाते थे। इस प्रकार समाज के सर्वांगीण उत्थान में उनकी अग्रणी भूमिका रहती थी। ◆◆◆

पारस पत्थर

संत रविदास जूते चप्पल बनाने का काम करते थे। एक दिन उनकी कुटिया में एक महात्मा आए। रविदास जी ने महात्मा जी को भोजन करवाया और अपने बनाए हुए जूते पहनाएं। निस्वार्थ सेवा से प्रसन्न होकर महात्माजी ने संत श्री को पारस पत्थर दिया। पत्थर को जैसे ही लौहे के औजारों पर लगाया तो वे सोने के हो गए। रविदासजी ने वह पत्थर लेने से मना कर दिया। उन्होंने कहा अब मैं सोने के इन औजारों से जूते-चप्पल कैसे बनाऊंगा? महात्माजी ने रविदास से कहा, इस पत्थर से तुम्हें कभी भी धन की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा। धन आने के बाद तुम्हें जूते-चप्पल बनाने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। ऐसा कहकर महात्माजी पारस पत्थर उसी कुटिया में सुरक्षित रख वहां से चले गए। एक साल के बाद फिर से महात्माजी संत रविदास की कुटिया में पहुंचे। उन्होंने देखा कि कुटिया की हालत वैसी ही है जैसी पिछले साल थी। उन्होंने हैरान होकर पूछा कि वह पारस पत्थर कहां है ?संत रविदास ने कहा कि वह पत्थर तो वहीं होगा, जहां आपने रखा था। महात्माजी ने कहा कि तुम्हारे पास इतना अ%छा अवसर था। इसका उपयोग क्यों नहीं किया?रविदासजी ने कहा गुरुजी मैं उससे बहुत सारा सोना बना लेता और धनवान हो जाता तो मुझे धन की चिंता रहती, कहीं कोई चुरा न ले। इसकी देखभाल करनी पड़ती। धन की वजह से चिंता बढ़ जाती। मेरे जीवन की शांति खत्म हो जाती। मुझे तो जीवन में शांति चाहिए। इसी कारण मैंने पारस पत्थर का उपयोग नहीं किया।◆◆◆

मातृ भूमि की याद

प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री रास बिहारी बोस जब जापान में थे, वह हर दिन अपना सिर दक्षिण पश्चिम की ओर करके सोते थे। उनके एक साथी को जब यह पता चला तो उसने रास बिहारी को, यह समझाने का यत्न किया कि जापान में इस दिशा में सोना मना है और इस प्रकार सोना अमंगल कारी माना जाता है।

बोस जी ने कहा हे मित्रवर! आप को पता है मैं अपनी मातृ भूमि से दूर हूँ और मुझे यह भी नहीं पता कि मैं वहाँ जा पाऊँगा कि नहीं। वो देखो सागर के उस पार इसी दक्षिण पश्चिम दिशा में मेरी मां अपने पुत्र को देख रही है। मैं अपनी माँ की गोद में अपना सिर रखने के लिए उतावला हूँ। सारा दिन काम करने के बाद रात को मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि कोई प्यारी तथा निराली आकृति (शक्ल) अपने पास आने का संकेत कर रही है। मैं दौड़ कर उधर जाने का यत्न करता हूँ। इसी भ्रम में मैं सो जाता हूँ। भारत माता की याद रखते हुऐ मुझे दिशा का ध्यान नहीं रहता। मैं हर प्रकार का अनिष्ट सहन करने के लिए तैयार हूँ। आप मुझे माँ के प्यार और दुलार से वंचित न करें।

उनके मित्र साथियों ने जब यह सुना तो उनकी देश भक्ति पर मुग्ध हो गये। इसके बाद उनके साथियों ने कभी भी वह बात दोबार नहीं कही।

धन्य है ऐसे देश भक्त।

भारतीय नारी शक्ति का अद्भुत पराक्रम

आप्रेशन सिंदूर में बारूद बना सिंदूर

डॉ. कर्म सिंह

इतिहास इस बात का गवाह है कि नारी ने विपरीत परिस्थितियों में परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के कल्याण के लिए संघर्ष करते हुए अपना सर्वस्व न्योछावर कर स्वयं के पराक्रमी अस्तित्व को सिद्ध किया है। यही परंपरा आज भी जीवंत है। वर्तमान में भारत पाकिस्तान के संघर्ष में भारतीय सेना ने नारी शक्ति की सहभागिता के साथ अद्भुत शौर्य एवं पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए विजय हासिल की है और इसी संदर्भ में युद्ध के परिणामों की मीडिया ब्रिफिंग करने वाली विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी का नाम स्वर्णिम इतिहास में अंकित हो गया। पाकिस्तान ने पहलगाम में आतंकी हमले में हिंदू पुरुषों को निशाना बनाया, उन्हें धर्म पूछ कर तथा हिन्दू होने पर गोली मार दी और उनकी नवविवाहित पत्नियों का सिंदूर उजाड़ करके 27 हिंदुओं की चुन-चुन कर हत्या कर दी गई। एक आतंकी हत्यारे द्वारा उन महिलाओं के माध्यम से इस जघन्य अपराध का संदेश प्रधानमंत्री को भिजवाया गया। आतंकी हमले में महिलाओं का सिंदूर उजाडना, उनकी करुण चीख पुकार नरेंद्र मोदी के लिए एक खुली चेतावनी थी। इस हत्याकांड में इस्लाम को स्वीकार न करते हुए जिन हिन्दू वीरों ने अपना धर्म हिंदू बताया वे भी सम्मान के प्रतीक हैं। महिलाओं की चीख पुकार देश में नारी जाति के सम्मान पर एक बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह एवं कलंक था जिसे सहन करना सहज नहीं था। उजड़े सुहाग का बदला लेने के लिए पूरे देश में आक्रोश उफान पर था। इसी बीच आतंकवादी सरगनाओं द्वारा हमले की जिम्मेदारी ली गई। अब पाकिस्तान का आतंकी नेटवर्क भारत के निशाने पर था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उच्च स्तरीय बैठकों के बाद सेना को बदला लेने की खुली छूट दे दी गई। कब, कहां, किस तरह से बदला लेना है, यह सेना पर छोड़ दिया गया। कुछ दिनों की गंभीर मंत्रणाओं के बाद सेना ने अपना टारगेट तय कर लिया और इस आक्रमण का नाम दिया गया **ऑपरेशन सिंदूर।** ऑपरेशन अभ्यास के तहत देशभर के 244 जिलों में नागरिक सुरक्षा अभ्यास किए गए, जिसमें ब्लैकआउट, हवाई हमले की चेतावनी और आपातकालीन प्रतिक्रिया की तैयारी शामिल थी।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत आतंकियों के पाकिस्तान तथा पीओके में स्थित आतंकियों के ठिकानों को नष्ट करने का जिम्मा भारतीय वायु सेना को सौंपा गया, जिसमें महिला सैन्य अधिकारियों की भी अहम भूमिका रही। भारत की सैनिक शक्ति ने पाकिस्तान और पीओके में पाकिस्तानी मिलिट्री तथा आईएसआई द्वारा चलाए जा रहे आतंकवादी ठिकानों पर जोरदार हमला किया गया। ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान के मुजफ्फराबाद, कोटली, गुलपुर, भिंबेर, मुरीदके, बहावलपुर, सियालकोट, झेल और चकसवारी स्थान पर मौजूद आतंकवादी ठिकानों को नष्ट कर दिया गया।

आतंकवादियों के मारे जाने पर पाकिस्तान बौखला गया और उसने भारत के आक्रमण को स्वीकार कर लिया तथा वह विश्व समुदाय को भारत के हमले का बदला लेने के लिए उकसाने लगा, परंतु 56 इस्लामी देशों में से केवल तुर्की और चीन ने ही पाकिस्तान का साथ दिया जबकि फ्रांस, रूस, इसराइल जैसे महान शक्तिशाली देश भारत के साथ खड़े हुए और हमें मित्रता निभाने का आश्वासन दिया। इसी दौरान विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि कहा हमें ज्ञान नहीं, सहयोग एवं समर्थन चाहिए। अगले दिन भारतीय सेना की नारी शक्ति ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से विश्व समुदाय को संबोधित करके पाकिस्तान में ध्वस्त किए गए नौ आतंकी ठिकानों के बारे में जानकारी दी। प्रेस वार्ता को विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी

द्वारा संबोधित किया गया। यह भारत के लिए गौरव का क्षण था। पाकिस्तान पर एक भारी जीत के बाद भारतीय वायु सेना ने अपने शौर्य और पराक्रम की मिसाल दुनिया के सामने पेश की है। वास्तव में अबकी बार पाकिस्तान की तसल्ली से पिटाई हो चुकी थीं। इन हमलों में उसके परमाणु ठिकाने भी बचे नहीं रहे। आनन-फानन में पाकिस्तान अमेरिका के चरणों में झुक गया। इसी दौरान यह खबर भी हवा में उड़ती रही कि पाकिस्तान में मौजूद परमाणु हथियार अमेरिका के होने की संभावना हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन में कहा-जैसे ही पाकिस्तान की और से कोई आतंकवादी गतिविधि या हमला होता है उसका तुरंत मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

अब अगर पाकिस्तान की सेना या आतंकवादी संगठनों ने भारत पर किसी तरह का हमला करने की कोशिश की तो उसका अंजाम भुगतना होगा। इधर बलूचिस्तान ने पाकिस्तान से किनारा करते हुए आजाद होने की घोषणा कर दी। उधर सिंध में भी पाकिस्तान के विरुद्ध भारी आक्रोश है। पाकिस्तान को अपनी भ्रष्ट और आतंकपरस्त नीतियों के कारण अफगानिस्तान, सिध और बलूचिस्तान के साथ जूझना पड़ रहा है और इसके लिए उसे विश्व बैंक, अमेरिका तथा चीन से सहायता लेने तथा इस्लामी देशों से भीख मांगने के सिवाय उसके पास कोई और दूसरा रास्ता नहीं बचा है। पाकिस्तान द्वारा लिया जा रहा मिलियन डॉलर का कर्ज हथियारों की खरीद और आतंकवादियों को ट्रेनिंग देने तथा पालने में खर्च किया जा रहा है। ऐसा भी माना जा रहा है कि भारत की सेना द्वारा किए गए मिसाइल के हमलों से पाकिस्तान के कैराना हिल्स में परमाणु संयंत्र के समीप मिसाइलें लगने से परमाणु का रिसाव होने से रेडिएशन फैलने का खतरा हो गया है। अमेरिका और अन्य देशों द्वारा अपने जहाज भेज कर इसका निरीक्षण भी करवाया गया है, परंतु अभी तक इसका कोई भी खुलासा सामने नहीं आया है। यह भी संभव है कि परमाणु संयंत्र के नजदीक मिसाइल का अटैक होने के बाद विश्व समुदाय की मध्यस्थता से युद्ध को फिलहाल कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो ,परंतु सेना इस सब के बाबजूद भारतीय सेना की स्थिति जस की तस बनी हुई है और किसी भी समय आतंकवादी हमले का मुंह तोड़ जवाब देने के लिए भारत पूरी मुस्तैदी से तैयार है।

भारत ने सैन्य, कूटनीतिक और आर्थिक मोर्चों पर सख्त तथा निर्णायक कदम उठाए हैं । आतंकवाद को युद्ध का कार्य घोषित करना , इस नीति के तहत, सेना को लक्ष्य, समय और तरीके चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है। पाकिस्तान के साथ राजनयिक संबंधों को समाप्त कर दिया गया और सभी पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा रद्द किए गए। इंडस जल संधि को निलंबित किया गया है। पाकिस्तानी जहाजों के भारतीय बंदरगाहों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया गया। पाकिस्तानी सोशल मीडिया, चैनलों पर व्यापक कार्रवाई की गई। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि आतंकवाद और उसके समर्थकों के खिलाफ अब कोई नरमी नहीं बरती जाएगी। यह नीति न केवल पाकिस्तान को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अलग-थलग करने का प्रयास है, बल्कि घरेलू सुरक्षा और नागरिकों के मनोबल को भी सुदृढ़ करने की दिशा में एक ठोस कदम है। भारत ने पाकिस्तान की आतंकवादी गतिविधियों को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उजागर करने के लिए सांसदों के प्रतिनिधिमंडल को विभिन्न देशों में भेजा है।

सेना और सुरक्षा एजेंसियों को अधिक अधिकार दिए गए हैं और जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ निरंतर ऑपरेशन चल रहे हैं। सोशल मीडिया और साइबर चैनलों पर निगरानी बढ़ाई गई है, जिससे पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी संगठनों की फंडिंग और प्रचार को रोका जा सके। भारत की इस कार्रवाई को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से समर्थन मिला है। ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की आतंकवाद के प्रति 'शून्य सहिष्णुता' की नीति को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है। यह अभियान न केवल एक सैन्य सफलता है, बल्कि भारत की रणनीतिक और कूटनीतिक दृढ़ता और सोयी राष्ट्र भक्ति को जगाने का एक जीवंत उदाहरण भी है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद, पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में बलूच लिबरेशन आर्मी ने पाकिस्तानी सेना के खिलाफ अपने हमलों को तेज कर दिया है। सिंध प्रांत में भी पाकिस्तान के प्रति आक्रोश तेजी से पनपने लगा है। पाकिस्तान कर्ज के बोझ में इतना दब चुका है कि उसने अपने देश का अधिकांश भूभाग चीन को सौंप दिया है। बलूचिस्तान ने पाकिस्तान से स्वयं को अलग बताते हुए आजादी की घोषणा कर दी है और अपना राष्ट्रीय ध्वज तथा राष्ट्रगान भी जारी कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भारतीय राजनेताओं का एक प्रतिनिधिमंडल भी विभिन्न देशों का दौरा करके भारत के पक्ष को विश्व समुदाय के सामने जोरदार तरीके से प्रस्तुत कर रहे हैं देश में तिरंगा यात्रा और विभिन्न राष्ट्रवादी कार्यक्रमों के माध्यम से भी देशभक्ति की लहर दौड़ गई है जो भविष्य में भारत की संप्रभुता, संगठन तथा सैन्यशक्ति को सुदृढ़ बनाने में अवश्य सफल रहेगी।◆◆◆

पहलगाम से सिंदूर तक
भारत का निर्णायक स्वर

हितेन्द्र शर्मा

22 अप्रैल 2025 की दोपहर भारत के हृदय में एक ऐसे ज़ख्म की तरह दर्ज हो गई, जिसकी टीस समय के साथ धीमी भले हो, परंतु विस्मृत नहीं हो सकती। यह दिन केवल एक तारीख नहीं था, यह उस पीड़ा की शुरुआत थी, जिसमें कश्मीर की वादियाँ रक्त से भीग गईं और पहलगाम, जो कभी प्रकृति की मधुरिमा के लिए जाना जाता था, एक युद्धभूमि-सा प्रतीत हुआ। जहाँ कुछ ही समय पहले तक पर्यटकों की चहचहाहट, बच्चों की खिलखिलाहट और प्रेमियों के कानाफूसी भरे पल गूंज रहे थे, वहीं अचानक बारूद की गंध और गोलियों की आवाज़ों ने उस समूचे सौंदर्य को चीखों में बदल दिया। आतंकियों ने जिस कायरता से हमला किया, वह किसी सैन्य ठिकाने पर नहीं, बल्कि उन निहत्थे नागरिकों पर था, जिनकी सबसे बड़ी गलती शायद यह थी कि वे अपनी मातृभूमि के सबसे सुंदर अंचल में कुछ सुकून के पल बिताने आए थे। उन 26 मासूमों की मृत्यु मात्र आंकड़े नहीं थे, वे टूटते परिवारों, उजड़ते भविष्य और डगमगाते विश्वास की त्रासद कथा थे।

यह हमला सिर्फ शरीर पर नहीं, भारत की आत्मा पर था। और शायद इसलिए इस बार प्रतिक्रिया भी आत्मा से ही निकली - भीतर से, गहराई से, पूरे राष्ट्र से। भारत जैसे देश ने, जो वर्षों से संयम, सह-अस्तित्व और संवाद की संस्कृति को लेकर चला है, अब यह तय कर लिया था कि चुप्पी भी एक सीमा के बाद अपराध बन जाती है। इस बार कोई निंदा-प्रस्ताव नहीं, कोई सामान्य शोक-संदेश नहीं, बल्कि एक निर्णायक उत्तर सामने लाया गया - ऐसा उत्तर जिसने न केवल भारत के शत्रुओं को चौंकाया, बल्कि पूरी दुनिया को यह संकेत दिया कि अब यह देश केवल पीड़ित नहीं, प्रत्युत्तर देने वाला भारत है।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी की रिपोर्ट्स ने यह सिद्ध कर दिया कि हमले के पीछे 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' का हाथ था - जो लश्कर-ए-तैयबा का ही नया चेहरा था। इस योजना की जड़ें पाकिस्तान की धरती पर थीं, और इसमें आधुनिक तकनीक, सैटेलाइट मॉनिटरिंग, जीपीएस लॉग्स, सब कुछ शामिल था। यह सिर्फ एक कश्मीर का मसला नहीं था, यह भारत की संप्रभुता, सुरक्षा और आंतरिक विश्वास का सीधा अपहरण था। अब प्रश्न यह नहीं था कि हमला कैसे हुआ, प्रश्न यह था कि भारत क्या करेगा?

भारत सरकार ने तत्काल निर्णय लिए। वाघा-अटारी सीमा को अस्थायी रूप से बंद किया गया, सिंधु जल संधि की समीक्षा की गई, और पाकिस्तान के साथ हर प्रकार के व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को सीमित किया गया। परंतु यह तो केवल प्रारंभ था। जब सेना को निर्देश मिला कि अब 'ऑपरेशन सिंदूर' को अंजाम देना है, तब यह स्पष्ट हो गया कि भारत अब केवल प्रतीक्षा नहीं करेगा, वह कार्रवाई करेगा - सुनियोजित, सटीक और निर्णायक। भारतीय वायुसेना और थलसेना ने सीमा पार के उन आतंकी शिविरों को निशाना बनाया जो वर्षों से सुरक्षित माने जाते थे। इन हमलों में सौ से अधिक आतंकवादियों के मारे जाने का दावा किया गया, और साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया कि यह प्रतिघात आत्मरक्षा की संवैधानिक भावना में किया गया है, न कि युद्ध की आक्रामकता में।

देशभर में इस कार्रवाई का स्वागत हुआ। भारत ही नहीं, विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों ने भी विरोध प्रदर्शन किए और यह संदेश दिया कि भारत की पीड़ा केवल सीमित भूगोल की नहीं, बल्कि एक समूची सभ्यता की पीड़ा है। न्यूयॉर्क, लंदन, टोरंटो, मेलबर्न से लेकर सिंगापुर तक, हर शहर में भारतवंशियों की आवाज़ उठी और यह घोषित किया गया कि भारत की आत्मा पर कोई भी आघात अब अनुत्तरित नहीं जाएगा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव की अपील भले संयम की रही हो, लेकिन अमेरिका, रूस और ब्रिटेन जैसे देशों ने भारत की स्थिति को समझने और समर्थन देने का संकेत दिया। ईरान जैसे राष्ट्र ने मध्यस्थता की बात कही और कई अन्य देशों ने पाकिस्तान की यात्रा को लेकर अपने नागरिकों को चेतावनी दी - यह अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के स्तर पर भारत की बदली हुई छवि और उसके बढ़ते हुए प्रभाव का संकेतक था।

भारत ने केवल सैन्य रणनीति पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि नागरिक स्तर पर भी सतर्कता बढ़ाई। 'ऑपरेशन अभ्यास' के अंतर्गत देश के 244 जिलों में युद्धकालीन ड्रिल्स आयोजित की गईं, जिनमें हवाई हमले की चेतावनी, ब्लैकआउट, आपातकालीन निकासी जैसे

अभ्यास किए गए। यह भारत की नई चेतना थी – जो केवल रणभूमि तक सीमित नहीं, हर गली-मोहल्ले, गाँव और शहर तक फैली थी। यह एहसास कीजिए कि भारत अब युद्ध से डरने वाला नहीं, बल्कि उससे निपटने के लिए मानसिक, सामाजिक और प्रशासनिक रूप से तैयार रहने वाला देश बन रहा है। और इस पूरे परिप्रेक्ष्य का सांस्कृतिक पक्ष भी सामने आया। पाकिस्तान के कलाकारों, फिल्मों और टेलीविजन् शो का भारत में बहिष्कार किया गया। यह केवल सांस्कृतिक भावनाओं की प्रतिक्रिया नहीं थी, यह उस आंतरिक संकल्प का प्रत्यक्ष स्वरूप था जो यह कह रहा था कि अब भारत अपने आत्म-सम्मान को बाज़ार, मनोरंजन और सहिष्णुता की आड़ में लुटने नहीं देगा। यह एक राष्ट्रीय मानस का परिवर्तन था – आत्म-सम्मान की पुनर्स्थापना।

12 मई को जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र को संबोधित किया, तो वह केवल एक सरकारी भाषण नहीं था – वह भारत की आत्मा की पुकार थी। उन्होंने स्पष्ट कहा कि पाकिस्तान के साथ भविष्य में कोई भी वार्ता केवल दो बिंदुओं पर केंद्रित होगी – आतंकवाद और पाक अधिकृत कश्मीर। यह वाक्य नहीं, एक नीति थी। यह विचार नहीं, एक दृढ़ प्रतिज्ञा थी। यह वह ऐलान था जो बताता था कि अब भारत अपने घावों को सिर्फ सहेगा नहीं, उनका उत्तर देगा – और वह भी पूरी शक्ति, योजना और आत्मविश्वास के साथ।

आज जब हम उस त्रासदी को स्मरण करते हैं, तो हमें केवल शोक नहीं करना चाहिए, हमें उस चेतना को भी स्मरण करना चाहिए जिसने हमें बदलने को प्रेरित किया। पहलगाम की वह पीड़ा एक प्रतीक बन गई है – एक प्रश्नचिन्ह नहीं, बल्कि एक उत्तरवाची भावना का। यह संघर्ष केवल गोलियों और बमों का नहीं, यह विचारों, नीतियों, और संस्कृति के पुनर्निर्माण का भी संघर्ष है।

भारत ने एक लंबा सफर तय किया है – चुप्पी से उत्तर तक, पीड़ा से प्रतिकार तक, शांति से शक्ति तक। यह वही भारत है जो अब अपनी सीमाओं की रक्षा केवल सीमा पर नहीं करता, बल्कि शब्दों, निर्णयों और जनचेतना के माध्यम से करता है। यह वही भारत है जो अब यह जानता है कि जब वादियाँ पुकारती हैं, तो उत्तर केवल करुणा नहीं, साहस होना चाहिए। यह वही भारत है जो अब अडिग है, अटल है और आत्मसम्मान से परिपूर्ण है।◆◆◆

4 दिन में घबराए पाकिस्तान-अमेरिका

भारत और पाकिस्तान के बीच हालिया संघर्ष मात्र चार दिनों का था, लेकिन इसने कई दशकों से छुपे रहस्यों से पर्दा उठा दिया। वर्षों से भारत को यह डर दिखाया जाता रहा कि पाकिस्तान एक परमाणु संपन्न देश है, जिससे युद्ध की स्थिति में भारी विनाश संभव है। किंतु इस युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया कि पाकिस्तान के पास वास्तव में कोई स्वदेशी परमाणु हथियार नहीं थे।

दरअसल, यह उजागर हुआ कि 1998 में अमेरिका ने अपने परमाणु हथियारों का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान में छुपाकर रखा था। इसका उद्देश्य था – वैश्विक संघर्ष की स्थिति में खुद को सुरक्षित रखते हुए, क्षेत्रीय स्तर पर अन्य देशों को झेलने देना। यह तथ्य चीन को पहले से ज्ञात था, इसीलिए वह पाकिस्तान को हर संभव समर्थन देता रहा। भारत जब अपने परमाणु परीक्षण कर रहा था, तो अमेरिका ने पाकिस्तान से भी परीक्षण करवा कर उसे परमाणु शक्ति घोषित करवा दिया, जिससे भारत पर मनोवैज्ञानिक दबाव बने। भारत में अमेरिका समर्थक विचारधारा के कुछ लोग भी इस डर को फैलाने में सहायक रहे। लेकिन जब देश की बागडोर एक सशक्त नेतृत्व के हाथ में आई, तब भारत ने आत्मनिर्भरता और वैश्विक सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कूटनीति ने अमेरिका को भारत के साथ सहयोग के लिए विवश कर दिया।

जब पाकिस्तान ने पहलगाम में निर्दोष हिंदुओं की हत्या की, तब भारत ने अभूतपूर्व सैन्य कार्यवाही की। चार दिन के भीतर ही भारतीय सेना ने पाकिस्तान को हिला दिया और उसके परमाणु ठिकानों तक पहुंच बना ली। अमेरिका, जो अपने हथियारों को नष्ट होता देख नहीं सकता था, भारत से युद्ध विराम की गुहार करने लगा। प्रधानमंत्री मोदी ने चतुराई से काम लेते हुए, कठोर शर्तों के साथ युद्ध विराम स्वीकार किया। इस संघर्ष ने दुनिया को भारत की सैन्य शक्ति और कूटनीतिक सूझबूझ का अहसास करा दिया। अमेरिका को भी यह मानना पड़ा कि अब भारत को हल्के में नहीं लिया जा सकता।◆◆◆

ऑपरेशन सिंदूर के बाद राष्ट्र के नाम संदेश

नया भारत सशक्त भारत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वक्तव्य की 10 मुख्य बातें

असीम शौर्य की विजय : भारत की सेनाओं ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत आतंक के खिलाफ साहस, रणनीति और पराक्रम का ऐतिहासिक प्रदर्शन किया।

पहलगाम की बर्बरता का निर्णायक जवाब : निर्दोष नागरिकों की निर्मम हत्या के बाद, पूरा देश एक स्वर में खड़ा हुआ और निर्णायक कार्रवाई की मांग की।

देश की भावनाओं का प्रतिबिंब : 'ऑपरेशन सिंदूर' सिर्फ सैन्य अभियान नहीं, करोड़ों भारतीयों की न्याय की पुकार और भावना की अभिव्यक्ति है।

पाकिस्तान की दुस्साहसिक प्रतिक्रिया का जवाब : पाकिस्तानी हमलों को भारत की एयर डिफेंस ने विफल किया और जवाब में उसके एयरबेस तक को नुकसान पहुंचाया।

100+ खूंखार आतंकवादियों का अंत : भारत की इस कार्रवाई में सौ से अधिक आतंकवादियों का सफाया हुआ और दशकों से बचते फिर रहे आतंकियों का अंत हुआ।

सीमाओं से परे सर्जिकल आक्रमण : भारतीय सेना ने पाकिस्तान में बहावलपुर और मुरीदके जैसे आतंकी ठिकानों पर सटीक प्रहार किया।

न्यू नॉर्मल तय हुआ : ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद के विरुद्ध भारत की नई रणनीति की रूपरेखा तय की — निर्णायक, त्वरित और वैश्विक संदेश देने वाला।

न्यूक्लियर ब्लैकमेल नहीं सहेंगे : भारत ने स्पष्ट किया कि परमाणु हथियारों की आड़ में आतंक को पनपने नहीं दिया जाएगा — सीधा और सटीक जवाब मिलेगा।

'टैरर और टॉक' साथ नहीं चल सकते : भारत की नीति स्पष्ट : आतंकवाद और वार्ता, आतंक और व्यापार साथ नहीं चल सकते। पानी और खून साथ नहीं बह सकते।

मेड इन इंडिया डिफेंस का प्रदर्शन : इस ऑपरेशन में स्वदेशी हथियारों और तकनीक ने भारत की क्षमता को सिद्ध किया। भारत ने स्पष्ट किया कि परमाणु हथियारों की आड़ में आतंक को पनपने नहीं दिया जाएगा।

हिमाचल की शांत वादियों में केवल प्रकृति की सुंदरता ही नहीं, बल्कि महिलाओं के आत्मबल और सशक्तिकरण की भी एक अनोखी मिसाल दिखाई देती है। सामाजिक और आर्थिक रूप से महिलाओं को मजबूत बनाने के लिए सेल्फ हेल्प ग्रुप यानी स्वयं सहायता समूह एक प्रभावशाली माध्यम बनकर उभरे हैं। ये समूह हिमाचल की ग्रामीण महिलाओं को न केवल स्वरोजगार का अवसर देते हैं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन की राह पर भी अग्रसर करते हैं। ‘शी हाट’ एक ऐसी कहानी है, जो यह बताती है कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं जब संगठित होती हैं, तो वे केवल अपने जीवन को नहीं, बल्कि पूरे समुदाय को नई दिशा देने में सक्षम होती हैं। यह पहल आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है कि आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन का रास्ता गांव की पगडंडियों से होकर भी राष्ट्रीय विकास की ओर जाता है।

शी हाट आज सिर्फ एक हॉस्पिटैलिटी सेंटर नहीं, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के परिश्रम, आत्मविश्वास और संगठन शक्ति का प्रतीक है। यहाँ की महिलाएं स्वयं इसे संचालित करती हैं - अतिथि सेवा से लेकर व्यंजन निर्माण, प्रबंधन से लेकर विपणन तक, हर कार्य में उनकी सक्रिय भागीदारी होती है। ‘शी हाट’ ने उन्हें केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि सम्मानजनक जीवन जीने का ज़रिया दिया है।

इसी भावना का प्रतिफल है – ‘शी हाट’, जो कि सिरमौर ज़िले में कुमारहट्टी से नाहन रोड पर 30 किलोमीटर की दूरी पर बाग पशोग पच्छाद में स्थित एक अनूठा अतिथि गृह एवं भोजनालय है। सेल्फ हेल्प ग्रुपों की शक्ति इस बात में है कि वे सीमित संसाधनों से भी बड़े सपने सच कर दिखाते हैं। 10 से 25 महिलाओं का एक समूह जब थोड़ी-थोड़ी पूंजी को जोडक़र छोटे स्तर पर व्यवसाय प्रारंभ करता है, तो वह न केवल आय का साधन बनता है, बल्कि उनका आत्मविश्वास भी बढ़ाता है। यही आत्मबल उन्हें नई दिशा में सोचने, निर्णय लेने और समाज में अपनी भूमिका को सशक्त बनाने में सहायता करता है।

‘शी हाट’ की विशिष्टता यहाँ के पारंपरिक सिरमौरी व्यंजन और स्थानीय उत्पाद हैं। यहाँ आगंतुकों को सच्चे हिमाचली आतिथ्य के साथ साथ स्वादिष्ट और पारंपरिक भोजन मिलता है। साथ ही, स्थानीय महिलाओं द्वारा बनाए गए उत्पाद जैसे दृ चीड़ की पत्तियों से बने हस्तशिल्प, ऊनी वस्त्र, और स्थानीय मसालों की बिक्री भी होती है। यह पहल न केवल स्थानीय संस्कृति के संरक्षण का माध्यम है, बल्कि महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक मजबूत कदम भी है।

‘शी हाट’ यह प्रमाणित करता है कि जब महिलाओं को मंच और अवसर मिलते हैं, तो वे समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन ला सकती हैं। यह केवल एक व्यवसायिक पहल नहीं, बल्कि नारी शक्ति की सामूहिक चेतना, स्वावलंबन की प्रेरणा, और आत्मनिर्भरता का जीवंत उदाहरण है। यह पहल हिमाचल की उन बेटियों के सपनों को पंख देती है, जो सीमित साधनों के बावजूद उड़ान भरने का हौसला रखती हैं। ◆◆◆

केवल कुशल शासिका ही नहीं, संवेदनशील समाज सुधारक भी थी

अहल्या बाई होलकर

जमली, हमीरपुर – राष्ट्रीय सेविका समिति की जमली शाखा में लोकमाता अहिल्या बाई होलकर जी का 300वां जन्मोत्सव बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस विशेष अवसर पर जिला के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। हमीरपुर के जमली में आयोजित कार्यक्रम में जिला हमीरपुर की संचालिका श्रीमती गंगा जी बतौर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं। अपने उद्बोधन में श्रीमती गंगा जी ने देवी अहिल्या बाई होलकर के जीवन और उनके समाज कल्याण हेतु किए गए कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि अहिल्या बाई न केवल एक कुशल शासिका थीं, बल्कि एक संवेदनशील समाज सुधारक भी थीं। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, गरीबों की सहायता और धर्म स्थानों के पुनर्निर्माण जैसे कई जनहितकारी कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाई। उनके शासनकाल में राज्य में न्याय, सेवा और समर्पण की भावना सर्वोपरि थी। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना से हुआ, जिसके बाद सेविकाओं ने लोकमाता अहिल्या के जीवन पर आधारित गीत प्रस्तुत किए। बच्चों द्वारा नृत्य और नाट्य मंचन ने कार्यक्रम में और भी उत्साह भर दिया। उपस्थित लोगों ने भी लोकमाता के प्रेरणादायी जीवन से जुड़े संस्मरण साझा किए।

शाखा की संयोजिका ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों का उद्देश्य नई पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति और प्रेरणास्रोत महापुरुषों के जीवन से परिचित कराना है। अंत में सभी ने लोकमाता अहिल्या बाई के जीवन से प्रेरणा लेने और समाज सेवा में योगदान देने का संकल्प लिया। ये कार्यक्रम सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय पहल रहा।◆◆◆

बुद्ध पूर्णिमा पर पुष्पांजलि कार्यक्रम

हमीरपुर : बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिमाचल प्रांत द्वारा हमीरपुर में पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महात्मा बुद्ध के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके विचारों और शिक्षाओं को स्मरण किया गया। इस अवसर पर प्रांत संघचालक डॉ. वीर सिंह रांगड़ा जी, सह प्रांत संघचालक श्री अशोक शर्मा जी, उत्तर क्षेत्र सह कार्यवाह डॉ. किस्मत कुमार जी, क्षेत्र प्रचारक श्री जतिन कुमार जी सहित प्रदेश भर के अनेक वरिष्ठ स्वयंसेवक व कार्यकर्ता उपस्थित रहे। महात्मा बुद्ध के जीवन के मूल संदेश – करुणा, अहिंसा, सत्य और संयम आज की सामाजिक परिस्थितियों में अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके सिद्धांत न केवल आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं, बल्कि समाज में समरसता, शांति और सह-अस्तित्व की भावना को भी मजबूत करते हैं। प्रांत संघचालक डॉ. वीर सिंह रांगड़ा जी ने कहा कि महात्मा बुद्ध के जीवन दर्शन को अपनाकर हम समाज में नैतिकता, शांति और मानवता को स्थापित कर सकते हैं। आज की पीढ़ी को चाहिए कि वे बुद्ध के उपदेशों से प्रेरणा लेकर एक संतुलित, विवेकशील और सेवा-प्रधान जीवन जीएं। उन्होंने कहा कि उनकी शिक्षाएं विचार समाज को संदेश देते हैं कि भारतीय परंपरा और संस्कृति में निहित मूल्य आज भी हमें दिशा देने में सक्षम हैं। ◆◆◆

कार्यकर्ता विकास वर्ग-द्वितीय

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता विकास वर्ग-द्वितीय का उद्घाटन रेशीमबाग स्थित डॉ. हेडगेवार स्मृति भवन परिसर स्थित महर्षि व्यास सभागार में हुआ। इस दौरान सह सरकार्यवाह एवं वर्ग के पालक अधिकारी आलोक कुमार जी, सह सरकार्यवाह रामदत्त चक्रधर जी तथा वर्ग सर्वाधिकारी पूर्वी उड़ीसा प्रांत के संघचालक समीर कुमार मोहंती ने भारत माता की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर वर्ग का शुभारंभ किया। वर्ग में देशभर से 840 शिक्षार्थी सम्मिलित हुए हैं।◆◆◆

नेरी शोध संस्थान हमीरपुर में छात्राओं का शैक्षणिक भ्रमण

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी में कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय हमीरपुर के छात्राओं ने शैक्षणिक भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने संस्थान के पुस्तकालय, संग्रहालय, अभिलेखागार आदि का अन्वेषण किया। इसके उपरान्त संस्थान के निदेशक डॉ. चेतराम गर्ग ने छात्राओं के साथ वर्तमान संदर्भ में भारत-पाकिस्तान संघर्ष तथा वैश्विक परिस्थितियां विषय पर चर्चा की।

छात्राओं ने शोध नेरी में पठन-पाठन के लिए आवश्यक शान्त वातावरण और संस्थान में उपलब्ध पुस्तकों व अभिलेखागारीय स्त्रोतों की सराहना की और भविष्य में यहां आने की इच्छा जाहिर की। इस उपलक्ष्य पर शोध संस्थान के उपाध्यक्ष विजय शर्मा, कोशाध्यक्ष देशराज शर्मा, रमेश रांगड़ा, मिहिर बोराना व कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. मोती राम शर्मा, सहायक आचार्य डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश सहित 15 छात्राएं उपस्थित रहीं।◆◆◆

देवर्षि नारद जयंती

धर्मशाला, शिमला व सोलन में कार्यक्रम आयोजित

केंद्रीय विवि में देवर्षि नारद पीठ की होगी स्थापना

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पत्रकारिता, जनसंचार एवं नव मीडिया स्कूल तथा विश्व संवाद केंद्र, शिमला के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के सभागार में देवर्षि नारद जयंती का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत व परिचय पत्रकारिता, संचार व नव मिडिया स्कूल की अधिष्ठाता व अध्यक्षा डॉ अर्चना कटोच ने किया। मौके पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र कुमार रहे और मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल मौजूद रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय में देवर्षि नारद पीठ की स्थापना की जाएगी ताकि संचार की दृष्टि से नारद साहित्य पर और अधिक शोध व अध्ययन हो सके।

मीडिया में सकारात्मक सामग्री रहे ज्यादा

इस मौके पर उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य वक्ता तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र कुमार ने विश्व संवाद केंद्र तथा देवर्षि नारद जयंती समारोह प्रारम्भ करने की यात्रा का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि प्रारम्भ में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा किंतु समय के साथ अब यह कार्य आसान हो गया है। अब देवर्षि नारद जयंती मनाने का कार्य विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के मीडिया विभागों व विभिन्न मीडिया संगठन भी स्वत: ही करने लगे हैं, जो कि बहुत ही प्रसन्नता व संतोष का विषय है। आज के समय में संवाद बहुत आवश्यक है। जब संवाद हीनता की स्थिति पैदा होती है तब बहुत बड़ी-बड़ी समस्याओं का आकरण ही जन्म होता है। आज विश्व में नरेटिव के माध्यम से लोगों का मानस बदला जा रहा है। हमें भी उसमें आगे रहना होगा, मगर ध्यान रखना होगा कि नरेटिव युद्ध में संयम और संतुलन बना रहे अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाती है। जरुरत इस बात की है कि मीडिया में नकारात्मक सामग्री कम हो व सकारात्मक सामग्री ज्यादा हो। इसका समाज को ज्यादा लाभ होता है।◆◆◆

आज के सूचना युग में भी देवर्षि नारद जी के संवाद-साधना की प्रासंगिकता: प्रो. वीर सिंह रांगड़ा

विश्व संवाद केन्द्र, शिमला द्वारा देवर्षि नारद जयंती के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन शिमला के रोटरी टाउन हॉल में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. वीर सिंह रांगड़ा, आचार्य भौतिक शास्त्र विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। प्रो. रांगड़ा ने कहा कि नारद मुनि केवल एक पौराणिक पात्र नहीं हैं, बल्कि वे संचार, संवाद और ज्ञान के प्रतीक रहे हैं। वे त्रिकालदर्शी महर्षि थे, जो तीनों लोकों में निर्बाध गति से विचरण करते हुए ज्ञान, भक्ति और संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते थे। उन्होंने अपने मधुर संवाद और वाणी के माध्यम से समाज में प्रेम, भक्ति और अध्यात्म का बीजारोपण किया। प्रो. रांगड़ा ने कहा कि देवर्षि नारद ने आम जनमानस को सत्य, धर्म और आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया।

सत्य और जिम्मेदारी की ओर लौटे मीडिया:अजय श्रीवास्तव

नारद जयंती कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अजय श्रीवास्तव संस्थापक अध्यक्ष उमंग फाउंडेशन एवं सह आचार्य पत्रकारिता एवं जनसंचार (सेवानिवृत्त) हिमाचल विश्वविद्यालय ने कहा कि विश्व संवाद केन्द्र शिमला जो कार्य कर रहा है संभवत: व पत्रकारों से जुड़ी कोई अन्य संस्था आज तक नहीं कर पाई है। इसका मुख्य मकसद पत्रकारिता में राष्ट्रीयता को सर्वोपरि रखना है। अजय श्रीवास्तव ने कहा कि देवऋषि नारद ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। जिन्हें संचार व संवाद में अहम भूमिका निभाई है। पत्रकार के नाते आज भी कई लोग ये काम कर रहे हैं लेकिन उनकी विश्वसनीयता संदेह के घेरे में हैं। उन्होंने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में पत्रकारों की अभूतपूर्व भूमिका रही।

गांव से ग्लोबल मंच तक:

हिमाचल के युवाओं की बड़ी उपलब्धि

मुंबई में आयोजित WFF में जीते 6 पदक

हौसले बुलंद हो तो कुछ भी नामुकिन नहीं

जब बात प्रतिभा, परिश्रम और संस्कृति की आती है, तो हिमाचल प्रदेश के युवा किसी से पीछे नहीं हैं। इसका जीवंत प्रमाण हालही में मुंबई में आयोजित WFF SAARC INTERNATIONAL PRO-AM CHAMPION-SHIP 2025 में देखने को मिला, जहाँ हिमाचल के होनहार युवाओं ने 6 पदक जीतकर न केवल प्रदेश, बल्कि पूरे देश का नाम रोशन किया।

यह कोई साधारण जीत व उपलब्धि नहीं थी। यह उन युवाओं की कहानी है, जो दूरस्थ गांवों से निकलकर कड़ी मेहनत, अनुशासन और अपने सांस्कृतिक मूल्यों के साथ अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचे। हिमाचल की टीम ने अपने प्रदर्शन से यह साबित किया कि सफलता के लिए संसाधनों की नहीं, बल्कि जज्बे और आत्मविश्वास की जरूरत होती है।

प्रतियोगिता में दीक्षा (ऊना) ने डब्ल्यूएफएफ एशिया ग्लैमर मॉडल कैटेगरी में प्रथम स्थान प्राप्त कर महिलाओं के लिए एक नई राह बनाई। संसार राणा (कांगड़ा) ने 50.कैटेगरी में सिल्वर मेडल जीतकर यह दर्शाया कि उम्र केवल एक संख्या है। सुरेंद्र सिंह ने 90 किलोग्राम कैटेगरी में दो सिल्वर मेडल हासिल कर मेहनत और समर्पण की मिसाल पेश की। इन युवाओं ने दिखा दिया कि गांव के बच्चे भी वैश्विक मंच पर अपनी चमक बिखेर सकते हैं।

इस आयोजन की गरिमा को बढ़ाया डब्ल्यूएफएफ हिमाचल एवं उत्तर भारत के प्रेसिडेंट मनीष कश्यप (रामपुर बुशेहर) ने, जो निर्णायक और विशेष अतिथि के रूप में मौजूद रहे। साथ ही, हिमाचल प्रदेश स्टेट सेक्रेटरी सूरज तंवर (अर्की, शिमला) की उपस्थिति ने प्रदेश की सक्रियता को दर्शाया। शो की एंकरिंग साहस सिंह चौहान (शिमला) ने की, जिनकी ऊर्जावान प्रस्तुति ने दर्शकों को जोड़े रखा। हिमाचल की टीम ने डब्ल्यूएफएफ वर्ल्ड प्रेसिडेंट ग्रेम लांसफील्ड को पारंपरिक हिमाचली टोपी भेंट कर न केवल अपनी संस्कृति को प्रस्तुत किया, बल्कि भारत की आत्मीयता और अभिवादन परंपरा को भी दुनिया के सामने रखा। यह जीत सिर्फ मेडल की नहीं है, यह जीत है उस आत्मविश्वास की जो हिमालय की गोद में पलते युवाओं के अंदर सन्निहित है। यह कहानी हर उस युवा के लिए प्रेरणा है, जो सीमित संसाधनों में भी बड़ा सपना देखने की हिम्मत रखता है। हिमाचल के इन युवाओं ने सिखा दिया–अगर हौसला बुलंद हो, तो गांव से निकलकर भी दुनिया जीती जा सकती है।◆◆◆

लाहौल-स्पीति का त्सराप चू भारत का सबसे बड़ा वन्यजीव रिजर्व घोषित, 1,700 वर्ग किलोमीटर में है फैला

हिमाचल के लाहौल–स्पीति का त्सराप चू भारत का सबसे बड़ा वन्यजीव रिजर्व घोषित किया गया है। 1,700 वर्ग किलोमीटर के इस विशाल क्षेत्र में हिम तेंदुए, साइबेरियन आइबैक्स और तिब्बती अर्गाली भी विचरण करते हैं। ट्रांस–हिमालयी को संरक्षित करने, कई खतरों में पड़ी प्रजातियों के आवास की सुरक्षा करने में यह क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। किब्बर, चंद्रताल अभयारण्य और लद्दाख में चांगथांग वन्यजीव अभयारण्य के बीच यह रिजर्व गलियारे का काम करेगा।

हौसलों की उड़ान

कृतिका शर्मा ने फतह की विश्व की सर्वोच्च चोटी माउंट एवरेस्ट

माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहराने वाली सिरमौर की बेटी की प्रेरणादायक कहानी

देवभूमि हिमाचल प्रदेश से निकली एक बेटी ने वो कर दिखाया, जिसे करने का सपना लाखों लोग देखते हैं। सिरमौर जिले के गिरिपार क्षेत्र की कृतिका शर्मा ने महज़ ''19 साल की उम्र में विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट को फतेह कर लिया और तिरंगा लहराकर पूरे देश का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया। जहाँ अधिकांश युवा इस उम्र में अपने करियर की दिशा तय कर रहे होते हैं, वहीं कृतिका ने अनुशासन, मेहनत और अटूट संकल्प के बल पर खुद को उन 10 होनहार एनसीसी कैडेट्स में शामिल किया, जिनका चयन माउंट एवरेस्ट एक्सपीडिशन 2025 के लिए हुआ था। देशभर के 17 लाख से अधिक एनसीसी कैडेट्स में से सिर्फ 10 को यह अवसर मिला और हिमाचल, पंजाब, हरियाणा से चयनित होने वाली एकमात्र कैडेट थीं कृतिका।

मार्च 2025 में दिल्ली में फिजिकल ट्रेनिंग शुरू हुई। फिर तीन अप्रैल को रक्षा मंत्री द्वारा टीम को झंडा सौंपा गया और पाँच अप्रैल को सभी सदस्य नेपाल के काठमांडू के लिए रवाना हो गए। वहाँ से लुकला तक की कठिन फ्लाइट और फिर एवरेस्ट बेस कैंप तक की थकाऊ ट्रैकिंग शुरू हुई। इस मिशन का नेतृत्व कर रहे थे अनुभवी पर्वतारोही कर्नल अमित बिष्ट। कुल मिलाकर टीम में 19 पर्वतारोही और 6 समर्थन सदस्य थे, जिनमें 5-5 कैडेट्स दोनों जेंडर से शामिल थे। कृतिका के इस अद्वितीय सफर पर उनके पिता भरत शर्मा गर्व से कहते हैं, मेरी बेटी ने साबित कर दिया कि बेटियां किसी भी ऊंचाई को छू सकती हैं, बस उन्हें हौसला और मौका चाहिए। कृतिका की यह उपलब्धि न केवल उनके परिवार, स्कूल और जिला सिरमौर के लिए गौरव की बात है, बल्कि यह पूरे हिमाचल और देश की बेटियों के लिए एक प्रबल संदेश है कि कोई भी सपना बड़ा नहीं होता, अगर हौसले बुलंद हों। आज जब माउंट एवरेस्ट की बर्फीली ऊँचाइयों पर भारत का तिरंगा लहरा रहा है, तो उसमें कृतिका की मेहनत, अनुशासन और संकल्प की चमक साफ झलकती है।◆◆◆

कनाडा की नई विदेश मंत्री अनीता आनंद ने

श्रीमद्भागवत गीता पर हाथ रखकर पद एवं गोपनीयता की शपथ ली

बेहतर और सुरक्षित दुनिया बनाने का किया वादा

हिन्दुओं के पवित्र ग्रंथ श्रीमद्भागवत गीता में छिपा है समस्त संसार और मानव जाति के कल्याण का मार्ग

देश का आईटी हब बनकर उभरेगा हिमाचल

सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नवोन्मेषी पहल

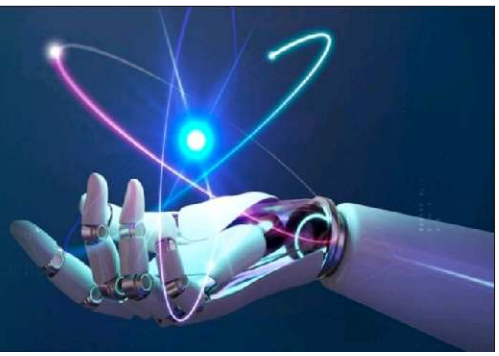

हिमाचल प्रदेश में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संभावनाओं के नए द्वार खुल रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कुशल कार्यबल की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। प्रदेश सरकार राज्य में नवाचार को बढ़ावा दे रही है। इसके दृष्टिगत समग्र ड्रोन इको सिस्टम की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। ड्रोन प्रौद्योगिकी कृषि, आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में अहम भूमिका निभाती है। ग्रीन हिमाचल विजन के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रदेश में ड्रोन प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करना नितांत अनिवार्य है।

वर्तमान इस वित्त वर्ष के दौरान लोगों को ड्रोन टैक्सी सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा कार्य योजना बनाई जा रही है, इससे प्रदेश के सुदूर क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पाद और दवाइयां इत्यादि की आपूर्ति करने में सहायता मिलेगी। ड्रोन टैक्नोलॉजी इंटरवेंशन से कृषि और बागवानी क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के दृष्टिगत जिला हमीरपुर, मंडी और कांगड़ा में ड्रोन स्टेशन स्थापित किए जाएंगे।

ड्रोन प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार युवाओं के लिए स्वरोजगार और रोजगार के अवसर सृजित करने की दिशा में कार्य कर रही है। प्रदेश के राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों से वर्ष 2024-25 में राज्य के 243 युवाओं ने ड्रोन से संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

युवाओं को ड्रोन प्रौद्यागिकी में दक्ष बनाने के साथ-साथ अब राज्य में न्यू एज पाठ्यक्रमों का समावेश भी किया जा रहा है।

हिमाचल नवाचार, ड्रोन तकनीक, एआई, और डाटा साइंस में तेजी से प्रगति कर रहा है—डिजिटल यूनिवर्सिटी और नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को वैश्विक आईटी अवसर मिलेंगे।

इस दिशा में जिला कांगड़ा के नगरोटा बगवां में राजीव गांधी राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय आर्टिफिशल इंटेलिजेंस और डाटा सांइस का नया महाविद्यालय, जिला शिमला के प्रगति नगर में अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में सिविल इंजीनियरिंग डिग्री कोर्स, जिला मंडी के राजकीय पॉलिटेक्निकल सुन्दरनगर में कम्प्यूटर सांइस एवं इंजीनियरिंग (एआई एण्ड मशीन निंग) का डिप्लोमा कोर्स शुरू करने को स्वीकृति प्रदान की है। इन पाठ्यक्रमों को शुरू करने के लिए आवश्यक स्टाफ की उपलब्धता सुनिश्चित जाएगी।

एआई और डाटा सांइस क्षेत्र में वर्तमान में अपार संभावनाएं है। इन क्षेत्रों में युवाओं का कौशल उन्नयन कर उन्हें रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

राज्य में नवाचार संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दो करोड़ रूपये के इनोवेशन फंड की स्थापना की जाएगी, जिसके माध्यम से प्रदेश के युवा अपनी नवाचार पहलों को साकार रूप प्रदान कर सकेंगे। जिला बिलासपुर के घुमारवीं में सार्वजनिक निजी भागीदारी व सैल्फ फाइनांसिंग आधार पर डिजिटल यूनिवर्सिटी ऑफ इनोवेशन, इन्टरप्रेन्योरशिप, स्किल एण्ड वोकेशनल स्टडीज की स्थापना की जाएगी। इस यूनिवर्सिटी के माध्यम से युवाओं के नवाचार और इन्टरप्रेन्योरशिप स्किल को निखारा जाएगा।

प्रदेश सरकार सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में युवाओं के लिए नवाचार और स्वरोजगार के नए द्वार खोल रही है। सरकार के इन प्रयासों से हिमाचल निश्चित रूप से देश का आईटी हब बनकर उभरेगा।◆◆◆

आईटी की नौकरी छोड़ अपनाई फूलों की खेती

मंडी के भाग सिंह सालाना कमा रहे 12 लाख रूपए

नौकरी के पीछे भागने के बजाय अब कई शिक्षित युवा खेती में नवाचार कर सफलता की नई कहानियां लिख रहे हैं। मंडी जिले के उपमंडल गोहर के चरखा गांव के भाग सिंह भी इन्हीं प्रेरणादायक चेहरों में से एक हैं। भाग सिंह ने बताया कि उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) विषय में पढ़ाई की है। कुछ समय आईटी क्षेत्र में नौकरी की, मगर मन कृषि क्षेत्र में ही रमा रहा। भाग सिंह ने खेती को अपना भविष्य चुना और पुष्प उत्पादन के ज़रिए आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश की। भाग सिंह ने बताया कि कुछ वर्षों तक आईटी क्षेत्र में कार्य किया, लेकिन मन कृषि क्षेत्र की ओर ही रूझान करता रहा। ऐसे में पुश्तैनी जमीन पर पारंपरिक खेती से शुरुआत की, जिसमें गेहूं, मक्की, मटर और जौ जैसी फसलें उगाईं। मौसम की अनिश्चितताओं के कारण जब संतोषजनक उत्पादन नहीं हुआ, तो उन्होंने बागवानी विभाग से संपर्क कर आधुनिक तकनीकों को अपनाने का निर्णय लिया।◆◆◆

लंबे समय तक जवान रखने वाला सुपरफूड अब हिमाचल में

कृषि विश्वविद्यालय ने किया सफल उत्पादन

हिमाचल के बागों में अब सेहत और स्वाद का खजाना लहलहाएगा! कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के वैज्ञानिकों ने देश में पहली बार संस्थागत रूप से ब्लूबेरी उगाने में सफलता हासिल करके एक बड़ी क्रांति ला दी है। यह खबर इसलिए भी खास है क्योंकि ब्लूबेरी सिर्फ एक स्वादिष्ट फल ही नहीं, बल्कि एक सुपरफूड है जो बढ़ती उम्र के प्रभावों को धीमा करने, अल्जाइमर और कैंसर जैसी बीमारियों से लडने में भी मददगार है। ब्लूबेरी एंटीऑक्सीडेंट गुणों, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन और एंथोसायनिन जैसे तत्वों से भरपूर होती है। अब तक भारत में इसकी व्यावसायिक खेती शुरूआती दौर में थी, लेकिन पालमपुर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की इस सफलता से हिमाचल प्रदेश के किसानों के लिए फसल विविधीकरण का एक नया और फायदेमंद विकल्प खुल गया है। यह न केवल आय बढ़ाएगा बल्कि पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।◆◆◆

सामाजिक संरचना में परिवार

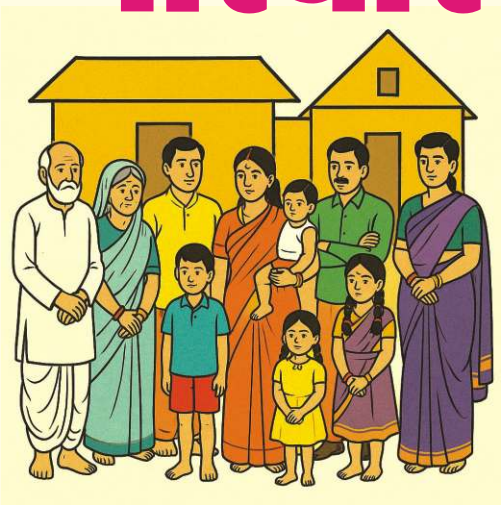

हमारी सामाजिक संरचना में परिवार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहां त्याग, बलिदान, परोपकार या उत्सर्ग सिखाने के अलग से केन्द्र नहीं है। परिवार इन सभी मूल्यों की धुरी है। यहां श्रवणकुमार को पितृभक्ति किसी शिक्षक ने नहीं सिखाई। करोड़ों असहाय वृद्धों, अपंगों की सेवा करने के ढंग सीखने के अलग से विद्यालय नहीं हैं। विश्व में पूजा या श्रद्धा के जन्मदाता भारत के नागरिक उदारता, सहिष्णुता, सहअस्तित्व के गुण स्वाभाविक ढंग से इसी परिवार व्यवस्था से सीखते हैं। यहां पारिवारिक जीवन भार नहीं पर सार है। यह क्रमशः ग्राम, प्रदेश और देश को सशक्त करता है।

संयुक्त परिवार और परिवार प्रमुख : हिन्दू घर में संयुक्त परिवार की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था रही है इसके अन्तर्गत परिवार में 'मैं' और 'मेरा' के स्थान पर 'अपना' की भावना प्रमुख रहती है। परिवार प्रमुख के लिए झगड़े नहीं होते। बिना कुछ कहे सुने परिवार का ज्येष्ठ व्यक्ति परिवार प्रमुख बन जाता है व यह मान्यता उसे परिवार या सम्बन्धी ही नहीं बल्कि पूरा समाज देता है। समारोहों का निमन्त्रण, सूचना प्रबन्धन उसी के माध्यम से होता है। यहां व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा जागृत नहीं होती। ज्येष्ठ को कनिष्ठ की चिन्ता व कनिष्ठ को ज्येष्ठ पर विश्वास रहता है। सारा ढांचा सुसंबद्ध ढंग से परिचालित रहता है। है। आयु और अनुभव की परिपक्वता को अधिमान दिया जाता है। कनिष्ठ सदस्य की प्रतिभा को कुचला नहीं जाता बल्कि उसके प्रस्फुटन के अवसर दिये जाते हैं।

इस प्रकार से हिन्दू संयुक्त परिवार एक व्यवहारिक और सामूहिक भावना से कार्य करने वाली व्यवस्था है। आज यह व्यवस्था विघटित हो रही है। यदि किसी तरह यह बची रहे तो राष्ट्र और समाज जीवन के लिए अत्यन्त हितकर है। कल, आज और कल का सुन्दर सम्मिश्रण दादा, परदादा से युक्त परिवार गौरव की दृष्टि से देखा जाता है। दुनिया में भारत उन महान देशों में अग्रणी है जहां वृद्धावस्था को अति महत्त्वपूर्ण व उपयोगी माना गया है। जीवन के अनुभवों को संचित करना, पूर्वजों के अनुभवों का परिमार्जन, संशोधन व संवर्द्धन करते हुए उन्हें बदली हुई परिस्थितियों के लिए उपयोगी बनाना और उतरोत्तर पीढ़ियों को यह समृद्ध धरोहर विरासत रूप में सौंपना एक निरंतर प्रक्रिया है। यहां पुरानी और भावी पीढ़ियों में सम्पूर्ण तालमेल रहता है। वृद्धों का मार्गदर्शन, घर की रखवाली, सलाह मशविरा आदि वृद्धों के कार्य रहते हैं। अपने परिवार रूपी बाग को अपनी आंखों के सामने फलते-फूलते देखने की मानसिक शांति उन्हें उन क्लेशों व संतापों से दूर रखती है जो वृद्धाश्रमों में झेलने पड़ते हैं। छोटे बच्चे बुजुर्गों के असीम स्नेह से वंचित नहीं रहते। इस प्रकार भारतीय परिवार कल, आज और कल का सुन्दर सम्मिश्रण है।

संकोच का नहीं, विस्तार का विधान : भारतीय परिवार में जितने सम्बन्ध वाची शब्द हैं इतने अन्यत्र नहीं। प्रत्येक सम्बन्ध का विशेषण है। अंग्रेजी में मैटरनल और पैटरनल लगाते हुए दुविधा वाले संबन्ध संकेत हैं। यहां मामा, मासी, परनानी से लेकर हर सम्बन्ध परिभाषित है। यहां तक कि नौकरों को परिवार का अभिन्न अंग मानते हुए, रामूकाका, लक्ष्मी चाची आदि कहने की परिपाटी है। बिल्ली मौसी, गंगा मैया, चूहे मामा कह कर पूरी प्रकृति और उसके जीव जगत् से भी सम्बन्ध जोड़े जाते हैं।

हमारा दायित्व : भारतीय परिवार संस्था अश्वत्थ वृक्ष जैसी सनातन एवं आश्रयदात्री है। जिन देशों ने हमारे परिवार संस्था का उपहास किया, इसे काल वाह्य माना, अपने देशों में यह व्यवस्था तोड़ दी, उन्हीं देशों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए इसी परिवार संस्था का आधार लेना पड़ रहा है। हमारी परिवार व्यवस्था में हमारे मनीषियों के चिंतन की मौलिकता एवं श्रेष्ठता सिद्ध हुई है। हमें हिन्दू घर की इस व्यवस्था को पूरी आस्था और प्रयत्न के साथ बचाए रखना है इसी में हिन्दू समाज की श्रेष्ठ पहचान, भारत राष्ट्र की ऊंची शान और मानवता का सम्पूर्ण कल्याण समाहित है।◆◆◆

सनातन हिंदू धर्म
एवं भारत में उत्पन्न समस्त मत पंथ
विश्व में शांति चाहते हैं

प्रहलाद सबनानी

भारत में सनातन हिंदू धर्म तो अनादि एवं अनंत काल से चला आ रहा है परंतु बाद के खंडकाल में भारत में कई अन्य प्रकार के मत पंथ भी विकसित हुए हैं जैसे बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म आदि। भारत में विकसित विभिन्न मत पंथ मूलतः सनातन हिंदू संस्कृति का ही अनुपालन करते हुए दिखाई देते हैं और ऐसा कहा जाता है कि यह समस्त मत पंथ सनातन हिंदू धर्म की विभिन्न धाराएं ही हैं। भारत में विकसित मत पंथ सामान्यतः अपने दर्शन, कर्मकांड एवं सामाजिक ताने बाने के दायरे में अपने धर्म का अनुपालन करते हैं। भारत में हिंदू धर्म के सिद्धांतों पर चलने वाले नागरिकों की संख्या सबसे अधिक हैं एवं यह भारत का सबसे बड़ा धर्म है, जिसमें विभिन्न देवी देवताओं और पूजा प्रथाओं की एक विस्तृत प्रणाली शामिल है।

भारत में विकसित हुए मत पंथों में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के आधार पर हुई है। यह शिक्षाएं मानव जीवन से दुःख और उसके कारणों को दूर करने के सम्बंध में हैं। बौद्ध धर्म में ध्यान, प्रेम एवं करुणा पर जोर दिया जाता है। बौद्ध धर्म में कर्मकांड के महत्व को भी रेखांकित किया गया है परंतु इसका उद्देश्य ईश्वर की आराधना नहीं बल्कि मोक्ष की प्राप्ति करने से है।

भारत में ही विकसित दूसरे महत्वपूर्ण मत पंथ, जैन धर्म में अहिंसा, आत्म संयम, सत्य एवं ईमानदारी पर अधिक जोर दिया जाता है। जैन धर्म में ऐसा माना जाता है कि मोक्ष की प्राप्ति स्वयं के प्रयासों से ही सम्भव है।

भारत में ही विकसित तीसरा महत्वपूर्ण मत पंथ है सिख धर्म जिसकी स्थापना श्री गुरु नानक देव जी ने की थी। सिख धर्म ईश्वर में विश्वास, सेवा, समानता एवं सत्यनिष्ठा पर आधारित है। सिख धर्म में ईश्वर की उपासना की जाती है परंतु यह उपासना कर्मकांड से परे हैं।

भारत की सनातन हिंदू संस्कृति को पूरे विश्व में अति प्राचीन संस्कृति के रूप में देखा जाता है। मूल रूप से भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति में आध्यात्म का विशेष महत्व है जिसके अंतर्गत वसुधैव कुटुंबकम, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, विश्व का कल्याण हो, किसी भी जीव का अहित न हो जैसे भावों पर अमल करने का प्रयास किया जाता है। भारत में चूंकि मनुष्य के साथ साथ जीव जंतुओं, नदियों, पहाड़ों, पेड़ पौधों एवं जंगलों,

Dr. Hem Raj Sharma
ANO- Rectal Surgeon (Kshar Sutra)
(Piles, Fistula, Fissure, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Chikitsak Guru RAV
National Academy of Ayrveda New Dehli under Ministry of Ayush,Govt of India
Formerly Incharge Medical Officer DAH Una,
Govt of Himachal Pradesh
Director
JAGAT HOSPITAL & KSHAR SUTER CENTER
Near Govt College Una HP
Mob.: 94184-88660, 88940-68358, 94593-88323
Email: drhemrajsharma55@gmail.com

आदि में भी ईश्वर का वास माना जाता है इसलिए किसी भी जीव को कोई क्षति न हो इस भावना को न केवल को आगे बढ़ाया जाता है बल्कि इस सिद्धांत पर अमल भी किया जाता है। इसीलिए भारत मूलतः शांतिप्रिय देश माना जाता है तथा भारत में हिंसा के लिए तो कोई जगह ही नहीं है। भारत के धर्मग्रंथों में भी जाने अनजाने में भी की गई जीव हत्या को पाप की संज्ञा दी गई है। सनातन हिंदू संस्कृति के ग्रंथों, उपनिषदों, आदि द्वारा काम, कर्म एवं अर्थ को धर्म के साथ जोडक़र ही सम्पन्न करने के उपदेश दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए, महाभारत में वेद व्यास जी ने धर्म के आठ तरीके बताए हैं- यज्ञ - जिसका आशय है कि ऐसा कर्म जो समाज के लाभ के लिए किया जाता है। दान - समाज की सहायता करना। तप - अर्थात स्वयं में सुधार करते रहना, स्वयं का मूल्यांकन करना तथा नकारात्मक गुणों को दूर कर सकारात्मक गुणों का विस्तार करना। सत्यम् - सत्य के मार्ग पर चलना। क्षमा -दूसरों तथा स्वयं को गलतियों के लिए क्षमा करना। दंभ - इंद्रियों को वश में रखना। आलोभ - लालच नहीं करना एवं लालच में न आना। अध्ययन - स्वयं और दुनिया का अध्ययन करना। सनातन हिंदू धर्म एवं भारत में उत्पन्न मत पंथों के अनुयायी सामान्यतः धर्म के उक्त वर्णित आठ तरीकों पर चलने का प्रयास करते पाए जाते हैं। धर्म की इस राह पर चलकर उन्हें समाज में शांति पूर्वक रहने की प्रेरणा मिलती है एवं अंततः उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इसके साथ ही, विश्व के अन्य देशों में विकसित मत पंथों का अनुसरण करने वाले नागरिक भी भारत में पर्याप्त मात्रा में निवास करते हैं जैसे यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम के अनुयायी, आदि। विश्व के अन्य भागों में विकसित उक्त वर्णित मत पंथों को सेमेटिक रिलिजन की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि इनकी साझा उत्पत्ति एवं कुछ सामान्य अवधारणाएं होती हैं, जैसे एक ही ईश्वर में विश्वास, नैतिकता एवं कर्मकांड। यहूदी धर्म एक धर्मग्रंथ (ताल्मुद) पर आधारित है। इस धर्मग्रंथ में यहूदी लोगों की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाया गया है। यहूदी धर्म सेमेटिक धर्म की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें एक ईश्वर (येहव) में विश्वास, अनुष्ठान एवं नैतिक नियमों का पालन किया जाता है। ईसाई धर्म ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है, जो एक ईश्वर में विश्वास एवं ईसा मसीह के द्वारा उद्धार करने एवं उनके द्वारा ही मोक्ष करने पर जोर देता है। इसी प्रकार इस्लाम भी पैगंबर मुहम्मद साहब की शिक्षाओं पर आधारित है, जो कि एक ईश्वर (अल्लाह) में विश्वास एवं कुरान का पालन करने पर जोर देता है।

भारत में उत्पन्न विभिन्न धर्मों एवं मत पंथों में ईश्वर की अवधारणा विविध है, परंतु सेमेटिक धर्मों में केवल एक ईश्वर में ही विश्वास किया जाता है। भारतीय मत पंथों में कर्मकांड का महत्व कम है, जबकि सेमेटिक धर्मों में कर्मकांड की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। भारतीय मत पंथों में मोक्ष की प्राप्ति के विभिन्न मार्ग उपलब्ध हैं जिन पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है परंतु सेमेटिक धर्मों में मोक्ष की प्राप्ति केवल ईश्वर की कृपा से ही सम्भव है। भारतीय मत पंथों में विविध सामाजिक संरचना रहती है जबकि सेमेटिक धर्मों में एक समान सामाजिक संरचना रहती है एवं इसमें विविधता का अभाव है। भारत में उत्पन्न धर्मों एवं मत पंथों में तथा सेमेटिक धर्मों में सामाजिक संरचना एवं दर्शन भी अलग अलग है। भारत के बारे में यह कहा जाता है कि यहां विविधता में भी एकता दिखाई देती है क्योंकि आज भारत में विभिन्न धार्मिक आस्थाओं एवं विभिन्न धर्मों की उपस्थिति तथा उनकी उत्पत्ति तो दिखाई ही देती है, साथ ही, व्यापारियों, यात्रियों, आप्रवासियों, एवं यहां तक कि आक्रमणकारियों द्वारा भी यहां लाए गए धर्मों को आत्मसात करते हुए उनका सामाजिक एकीकरण दिखाई देता है। सभी धर्मों के प्रति हिन्दू धर्म के आतिथ्य भाव के विषय में जॉन हार्डन लिखते हैं, हालांकि, वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके द्वारा एक ऐसे गैर-हिन्दू राज्य की स्थापना करना है जहां सभी धर्म समान हैं।

पूरे विश्व में संभवत: केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता एवं धार्मिक सहिष्णुता को समाज द्वारा मान्यता प्रदान की जाती है। सनातन हिंदू संस्कृति में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय नागरिक स्वयं को किसी न किसी धर्म से सम्बंधित अवश्य बताता है। इसी के चलते, भारतीय नागरिक विश्व के किसी भी कोने में चला जाय परंतु अपनी संस्कृति को छोड़ता नहीं है। इसी कारण से यह कहा जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर आज की परिस्थितियों की बीच केवल भारतीय सनातन संस्कृति के माध्यम से ही पूरे विश्व में एक बार पुन : शांति स्थापित की जा सकती है। ◆◆◆ **लेखक भारतीय स्टेट बैंक से उपमहाप्रबंधक पद से सेवानिवृत्त है।**

अबूझमाड़ एनकाउंटर में एक करोड़ के इनामी बसव राजू सहित 27 माओवादी मारे गए, एक जवान भी शहीद

छत्तीसगढ़ के अबूझमाड़ इलाके में डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरजी) जवानों और माओवादियों के बीच चल रहे एक बड़े अभियान में सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता मिली है। इस मुठभेड़ में अब तक 27 माओवादियों के शव मिले हैं। मारे गए माओवादियों में एक करोड़ रुपये का इनामी शीर्ष माओवादी बसव राजू भी शामिल है।

मारे गए माओवादियों की संख्या अभी और बढ़ सकती है। राज्य के उप मुख्यमंत्री और गृहमंत्री विजय शर्मा ने इस बड़ी कामयाबी की पुष्टि करते हुए बताया कि इस ऑपरेशन में एक जवान बलिदान व एक अन्य जवान घायल हुआ है। यह मुठभेड़ नारायणपुर, बीजापुर और दंतेवाड़ा जिलों के डीआरजी जवानों की संयुक्त टीम द्वारा बुधवार सुबह से माड़ के दुर्गम और घने जंगलों में जारी थी। सुरक्षाबलों ने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बड़े माओवादी लीडरों को घेर लिया था।

यह अभियान माओवादी विरोधी अभियानों के लिए एक मील का पत्थर साबित हो रहा है। अबूझमाड़ को माओवादियों का अभेद्य गढ़ माना जाता रहा है। इस सफलता से क्षेत्र में माओवादी गतिविधियों पर लगाम लगने और उनके नेटवर्क को बड़ा नुकसान पहुंचने की उम्मीद है।

21 दिनों तक चले अभियान में मारे गए थे 31 माओवादी

यह हाल ही में करेंगुट्टा पहाड़ी पर चलाए गए सबसे बड़े अभियान के बाद एक और बड़ी सफलता है। करेंगुट्टा में 21 दिनों तक चले अभियान में 31 माओवादियों को ढेर कर सुरक्षाबलों ने बड़ी कामयाबी हासिल की थी। उस अभियान के दौरान जवानों ने 214 माओवादी ठिकानों और बंकरों को नष्ट किया था। साथ ही 450 आईईडी (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) भी बरामद किए थे। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद कोबरा और डीआरजी के 18 जवान घायल हुए थे, लेकिन उन्होंने दृढ़ता से अभियान को अंजाम दिया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने छत्तीसगढ़ को 2026 तक माओवादी मुक्त बनाने का लक्ष्य रखा है। ◆◆◆

बानू मुश्ताक को 2025 का अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार

'हार्ट लैंप' बनी कन्नड़ से अनूदित पहली विजेता पुस्तक

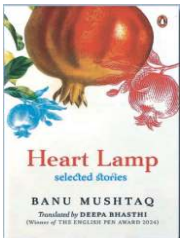

कन्नड़ लेखिका, अधिवक्ता और महिला अधिकारों की सक्रिय कार्यकर्ता बानू मुश्ताक ने अपने लघु कथा संग्रह 'हार्ट लैंप' के लिए 2025 का प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीतकर नया इतिहास रच दिया है। यह सम्मान पाने वाली वह दूसरी भारतीय लेखिका बनी हैं, जिनकी कृति भारतीय भाषा से अंग्रेज़ी में अनूदित है।

इस पुस्तक का अनुवाद कर्नाटक के कोडागु की लेखिका और अनुवादक दीप भास्थी ने किया है। उन्हें भी लेखक के साथ पुरस्कार से नवाज़ा गया। पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिह्न के साथ 50 हजार पाउंड (लगभग 53 लाख रुपये) की राशि दी।

पहली कन्नड़ कहानी संग्रह को मिला अंतरराष्ट्रीय बुकर :

'हार्ट लैंप' कन्नड़ से अंग्रेजी में अनूदित पहली पुस्तक है जिसे अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इससे पहले 2022 में लेखिका गीतांजलि श्री को उनके हिंदी उपन्यास 'रेत समाधि' के लिए यह पुरस्कार मिला था। बानू मुश्ताक अब तक छह लघु कहानी संग्रह, एक उपन्यास, एक निबंध संग्रह और एक कविता संग्रह लिख चुकी हैं। उन्हें कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार और दाना चिंतामणि अत्तिमब्बे पुरस्कार जैसे कई सम्मान मिल चुके हैं।

'हार्ट लैंप' : महिलाओं की जिंदगी का सजीव चित्रण

बुकर पुरस्कार की वेबसाइट के अनुसार, 'हार्ट लैंप' में दक्षिण भारत के मुस्लिम समाज की 12 लघु कहानियाँ शामिल हैं। ये कहानियाँ पितृसत्तात्मक संरचना में जी रही महिलाओं और लड़कियों की रोजमर्रा की चुनौतियों, संघर्षों और संवेदनाओं को उजागर करती हैं।◆◆◆

महापुरूषों का जीवन चरित्र ही समाज का इतिहास - आम्बेडक़र

डॉ. चेतराम गर्ग

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ भीमराव रामजी आम्बेडकर सामाजिक न्याय के महानायक थे। आज भारतीय समाज में उनके विचारों और कार्य की मान्यता है। 14 अप्रैल को उनका जन्मदिवस सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं में समाजिक समरसता के रूप में बनाया जाने लगा है। 98 वर्ष पूर्व उन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी सभा के माध्यम से वंचितों तथा पिछड़े वर्ग के लिए कार्य किया जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, और स्वावलम्व के लिए कार्य किए जाने के प्रावधान किए गए थे। वास्तव में वे नेताओं के जयन्ती समारोह पर खर्च होने वाले करोड़ो रूपये को समाज के धन का अपव्यय मानते थे। साथ में व्यक्ति पूजा भी उन्हें पसन्द नहीं थी। रानाडे जैसे महान समाजसेवक, न्यायविद् और जीवन में उच्च आदर्शों का पालन करने वाले महापुरुष की जयन्ती पर जाना स्वीकार किया था।

इस व्याख्यान में उन्होंने इतिहास, महापुरुषों के चरित्र और समाज पर पडने् वाले प्रभाव को अपने व्याख्यान का केन्द्र बिन्दु बनाते हुए कहा महापुरुषों का जीवन चरित्र ही समाज का इतिहास होता है। महापुरुष संकट से समाज को बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है; शिथिल पड़े समाज को नई ऊर्जा देता है। वह सब पत्थरों में चकमक जैसा महत्त्वपूर्ण होता है। सब पत्थर ऊर्जा पैदा नहीं कर सकते पर चकमक पत्थर में वह शक्ति होती है कि वह पत्थर के साथ रगड़ खाने से अग्नि को पैदा करता है। आम्बेडकर का कथन है- इतिहास का निर्माण महापुरुष के सद्कर्मों का प्रतिफल होता है। कोई भी सामाजिक संस्था, दल व व्यवस्था लम्बे समय तक एक जैसी ऊर्जा बनाए रखने की क्षमता नहीं रख पाती है। शिथिलता आने के कारण समाज के विकास की गति अवरूद्ध हो जाती है। समाधान का रास्ता मनुष्य ही निकाल सकता है। अतः एव मनुष्य इतिहास के निर्माण का साधन है। पर्यावरण सम्बन्धी शक्तियाँ चाहे दैवीय हों या सामाजिक, पर वे अन्तिम नहीं हो सकतीं। यह कार्य महापुरूष करता है। महापुरुष की कसौटी उसका चरित्र होता है। क्योंकि समूचे नैतिक गुणों के संगम के बिना कोई व्यक्ति महान नहीं कहला सकता। प्रसिद्ध व्यक्ति के लिए सच्चाई, ईमानदारी या निष्कपटता तथा प्रतिभा जैसे गुण उसे अपने साथियों की तुलना में प्रसिद्धि के लिए पर्याप्त होते हैं परन्तु महान व्यक्ति के लिए इन गुणों के साथ औरों से भिन्न और सामाजिक उद्देश्य की गतिशीलता से प्रभावित होना चाहिए।

आम्बडेकर का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष राजनीतिक नेताओं का सामाजिक सुधारकों को चुनौति देना एक सामाजिक दोष है। राजनीतिक नेता थोड़े समय में ही समाज पर अपना प्रभाव जमा लेता है और समाज की प्रशंसा के आदर का केन्द्र बन जाता है। राजनीतिक नेता का त्याग सम्मान की श्रेणी में आ जाता है। जबकि एक समाज सुधारक का कोई इस प्रकार स्वागत नहीं करता। आम्बेडकर के विचारों को 2024 में आध्यात्मिक संत प्रेमानन्द जी देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और गृह मन्त्री श्री अमित शाह के साथ एक वार्ता में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं - आज देश में जिस प्रकार के विकास की चर्चा और विकास हो रहा है, इस विकास के कीर्तिमान को स्थिर गति देने के लिए बुद्धियुक्त समाज की आवश्यकता होती है। बौद्धिक विकास के बगैर भौतिक विकास अधूरा और अपूर्ण है। समाज की समझ के साथ ही भौतिक विकास बुद्धिमान व्यक्तियों और उनकी योजना रचना ही राष्ट्र का आधार स्तम्भ है। वर्तमान समय में भौतिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक विकास की अधिक आवश्यकता है। स्वतन्त्रता के 78 वर्ष पूर्ण होने पर भी अभी हम अपने समाज का भरोसा और विश्वास सामूहिक शक्ति के रूप में राष्ट्रहित में नहीं लगा पाए हैं। हम अपने को वर्गों, जातियों और समुदाय के रूप में अपनी शक्ति के रूप में व्यक्त करते हैं जबकि यह शक्ति भेदभाव से रहित राष्ट्र की एकता के रूप में दिखनी चाहिए। राजनैतिक करणधार और सामाजिक विचारकों एकबद्ध शक्ति राष्ट्र की शक्ति है, यही आम्बेडकर का विचार है।◆◆◆

अंडर-16 वॉलीबॉल इंडिया कैंप में हिमाचल के एकमात्र लिबरो बने शब्द गौतम

जिला बिलासपुर के बरठीं क्षेत्र के होनहार वॉलीबॉल खिलाड़ी शब्द गौतम ने हिमाचल प्रदेश के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। अंडर-16 वॉलीबॉल इंडिया कैंप में बतौर लिबरो चयनित होने वाले वह प्रदेश के एकमात्र खिलाड़ी हैं। यह उपलब्धि बिलासपुर जिले के खेल इतिहास में पहली बार दर्ज हुई है। शब्द ने वॉलीबॉल की शुरुआती बारीकियां अपने दादा वासुदेव गौतम से घर के समीप एक ग्राउंड में सीखी। वॉलीबॉल में लिबरो की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। लिबरो एक रक्षात्मक विशेषज्ञ होता है, जो मुख्य रूप से सर्विस रिसीव करने, डिफेंस करने और गेंद को खेल में बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होता है। यह खिलाड़ी कोर्ट के पिछले हिस्से में खेलता है और तेजी, फुर्ती व सटीकता के साथ गेंद को नियंत्रित करता है। लिबरो को ब्लॉक करने या सर्व करने की अनुमति नहीं होती, लेकिन उसकी रक्षात्मक क्षमता टीम की रणनीति को मजबूत करती है।

शब्द की लिबरो के रूप में चयन उनकी उत्कृष्ट रक्षात्मक कौशल और खेल के प्रति समर्पण को दर्शाता है। खास बात यह है कि इंडिया कैंप में चयनित होने वाले शब्द गौतम हिमाचल प्रदेश के अकेले खिलाड़ी हैं। शब्द गौतम पिछले दो सालों से संगरूर के मुस्ताना साहिब स्पोर्ट्स होस्टल में वॉलीबाल खेल की बारीकियां सीख रहे हैं। इंडिया कैंप के लिए खिलाडियों का ट्रायल बंगलूर में हुआ, जिसमें देश के 110 खिलाडियों ने भाग लिया। इन खिलाडियों में से टॉप 24 खिलाडियों का चयन इंडिया कैंप के लिए किया गया, जिनमें से हिमाचल प्रदेश के बरठीं के शब्द गौतम भी शामिल हैं। ◆◆◆

किन्नौर की विभूति

ने दिल्ली में चमकाया हिमाचल का नाम

जिला किन्नौर की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला उरनी की छात्रा विभूति पुत्री बलराज नेगी ने दिल्ली में आयोजित स्कूल नेशनल गेम्स 2024-25 (अंडर- 19) में बॉक्सिंग प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक हासिल किया है। विभूति की इस उपलब्धि ने विद्यालय, गांव, जिला व प्रदेश का नाम रोशन किया है। कांस्य पदक हासिल करने के बाद अपने स्कूल पहुंची विभूति का विद्यालय के कार्यवाहक प्रधानाचार्य सतीश सहित स्कूल स्टाफ ने जोरदार स्वागत किया।◆◆◆

सुंदरनगर के बॉक्सर अनीकेत ठाकुर ने खेलो इंडिया में लहराया परचम, 85 किग्रा वर्ग में जीता रजत पदक

जिला मंडी के सुंदरनगर उपमंडल के 18 वर्षीय होनहार बॉक्सर अनिकेत ठाकुर ने राष्ट्रीय स्तर पर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। बिहार की राजधानी पटना में आयोजित खेलो इंडिया यूथ नेशनल चौंपियनशिप में 85 कि.ग्रा भार वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए अनिकेत ने रजत पदक अपने नाम किया है।◆◆◆

आतंकवाद पर ओवैसी का सख्त रुख

ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (AIMIM) के प्रमुख और हैदराबाद से सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर भारतीय सेना की कार्रवाई की खुलकर सराहना की है और इसे पाकिस्तान के डीप स्टेट को दिया गया कड़ा संदेश बताया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखते हुए कहा कि इस तरह की सख्त कार्रवाई से ही आतंकवाद की जड़ों को खत्म किया जा सकता है और भविष्य में पहलगाम जैसे हमलों को रोका जा सकता है।

ओवैसी ने सर्वदलीय बैठक में भी सक्रिय भूमिका निभाते हुए सुझाव दिया कि लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े समूह 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (TRF) को आतंकवादी संगठन घोषित करने के लिए वैश्विक अभियान चलाया जाना चाहिए। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से TRF को आतंकी संगठन नामित करने और पाकिस्तान को FATF की ग्रे लिस्ट में डालने की मांग की।

इस बीच, मोदी सरकार द्वारा बनाए गए सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में ओवैसी को भी शामिल किया गया है, जिसका उद्देश्य आतंकवाद के विरुद्ध भारत की नीति को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना है। इस जिम्मेदारी को स्वीकार करते हुए ओवैसी ने कहा कि राष्ट्रीय हित में सभी राजनीतिक दलों को एकजुट होकर काम करना चाहिए।

हालांकि, उन्होंने सरकार से पारदर्शिता की भी मांग की। ओवैसी ने स्पष्ट कहा कि लोकतंत्र में जवाबदेही आवश्यक है और ऑपरेशन सिंदूर की रूपरेखा तथा उपलब्धियों को जनता के सामने लाया जाना चाहिए। इस प्रकार, ओवैसी ने न केवल सेना की बहादुरी का समर्थन किया बल्कि आतंकवाद के खिलाफ सख्त वैश्विक कार्रवाई और लोकतांत्रिक जवाबदेही की ज़रूरत पर भी जोर दिया।◆◆◆

कांग्रेस को खटकने लगा शशि थरूर का राष्ट्र प्रेम

भले ही देश धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिकता के मुद्दे पर राजनीतिक दृष्टिकोण से प्रत्येक राजनेता अपने ही दल की विचारधारा को पुष्ट करता हुआ दिखता है। परंतु कुछ ऐसे राजनेता भी हैं जो राष्ट्र की सुरक्षा और देश के हित में राजनीतिक पार्टी के नजरिए से ऊपर उठकर अपना मत व्यक्त करते हैं। ऐसे ही एक प्रमुख नेता है -शशि थरूर।

काग्रेस सांसद शशि थरूर ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर अपनी प्रतिक्रिया में भारत सरकार की कार्रवाई को 'संयमित और सटीक' बताया है। उन्होंने कहा कि यह ऑपरेशन पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में स्थित नौ आतंकी शिविरों को निशाना बनाकर किया गया था। थरूर ने इस ऑपरेशन को लेकर सरकार की रणनीति की सराहना की और कहा कि उन्होंने यह बयान व्यक्तिगत क्षमता में दिया है, न कि कांग्रेस पार्टी या केंद्र सरकार की ओर से।

सरकार ने शशि थरूर को 'ऑपरेशन सिंदूर' के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार के लिए गठित सात सदस्यीय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया गया है। थरूर ने इस जिम्मेदारी को 'सम्मानजनक' बताया और कहा कि जब राष्ट्रीय हित की बात होगी, तो वे पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने कहा कि भारत दौरे पर आए फ्रांसीसी सीनेट के प्रतिनिधिमंडल ने ऑपरेशन सिंदूर पर भारत के रुख का पूर्ण समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि फ्रांसीसी प्रतिनिधिमंडल ने Soutien कहकर पूर्ण समर्थन दिया है। शशि थरूर द्वारा ऑपरेशन सिंदूर पर सरकार के रुख का समर्थन करने पर कांग्रेस पार्टी के भीतर मतभेद उत्पन्न हुए हैं। उनकी अंतर्राष्ट्रीय छवि और विदेश नीति में विशेषज्ञता को देखते हुए सरकार ने उन्हें प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया।◆◆◆

यह सर्वविदित है कि पृथ्वी पर लगभग 75 प्रतिशत पानी है और यह भी सर्वविदित है कि पीने योग्य पानी लगभग 1.5 प्रतिशत ही बचा है। उसको भी हम वायु प्रदूषण की तरह प्रदूषित करने में निरन्तर लगे हुए है। अगर यही स्थिति बनी रही तो मानव, पशु-पक्षी व अन्य जीवों के अस्तित्व पर घोर संकट आना निश्चित लगता है। हमारे दैनिक उपयोग की वस्तुओं में रसायनों का प्रयोग इतना अत्यधिक हो गया है कि पृथ्वी के अन्दर उपलब्ध पानी भी क्षारीय होता जा रहा है, तालाबों, गंगा, यमुना एवं अन्य नदियों को तो हम औद्योगिक एवं सीवेज के सिस्टम के कारण प्रदूषित कर ही रहे है। इस प्रकार के प्रदूषित पानी के पुन: प्रयोग से अनेकों प्रयोग से अनेकों प्रकार के रोगों से मानव प्रजाति ग्रसित रही है। आधुनिकीकरण की अन्धी दौड़ में हम इतने आगे निकल गये हैं कि अपने अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया है। जितनी एक बड़ी फैक्टरी जल प्रदूषित करती है, उतनी ही एक कॉलोनी (मुहल्ला) जल प्रदूषित करती है। इसका कारण प्रत्येक घर के स्नानागार में होने वाले विभिन्न सौंदर्य प्रसाधन, साबुन, शैम्पू व अन्य कैमीकल जिनका कि उपयोग बढ़ता जा रहा है, जिससे पृथ्वी की उपरी पर्त एवं नदी, तालाब प्रदूषित हो रहे है। इस स्थिति को रोकना होगा। पुरानी पद्धति जैसे मुल्तानी मिट्टी, रीठा आदि का प्रयोग करना होगा और अन्त में इस लेख के माध्यम से निवेदन करना चाहता हूँ कि इस संकट से बचने के लिए उपरोक्त तरीके अपनाने के साथ-साथ पानी के अपव्यय को रोकना होगा, पानी का प्रयोग कम से कम करें, पानी बचाएं जिससे पृथ्वी पर मानव, पशु-पक्षियों का अस्तित्व बचा रहे वरना प्रयोग में आना वाला 1.5 प्रतिशत जल 0.5 प्रतिशत होने में अब ज्यादा समय नहीं लगेगा। तब क्या होगा हम कल्पना कर सकते हैं। ◆◆◆ **लेखक सेवानिवृत्त बैंककर्मी एवं पर्यावरणविद् हैं।**

हिमाचल में बढ़ता कचरा संकट बड़ी चुनौती

हिमालय नीति अभियान (एचएनए) ने 7 मई 2025 को हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर राज्य में तेजी से बढ़ती ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या पर तत्काल ध्यान देने की मांग की है। एचएनए ने चेतावनी दी है कि विकास, पर्यटन और बदलती उपभोग प्रवृत्तियों के कारण प्रदेश के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कचरा प्रबंधन एक गंभीर चुनौती बन गया है।

एचएनए के अनुसार, हिमाचल प्रदेश हर साल 6,200 टन से अधिक प्लास्टिक कचरा उत्पन्न करता है। राज्य के 14 शहरी निकायों में 1.81 लाख मीट्रिक टन 'विरासत अपशिष्ट' (legacy waste) का अभी तक निस्तारण नहीं हुआ है। कई ब्लॉकों में बुनियादी अपशिष्ट प्रसंस्करण सुविधाएं और ढांचा तक नहीं है।

हालांकि राज्य में प्लास्टिक सड़कें, स्कूल बाय-बैक योजनाएं, सामुदायिक सफाई अभियान और सार्वजनिक-निजी भागीदारी जैसी कुछ सफल पहलें हैं, लेकिन वे बिखरी हुई हैं और उनमें समन्वय का अभाव है।

एचएनए ने सुझाव दिया है कि राज्य सरकार सभी संबंधित विभागों, पंचायती राज संस्थाओं, नगरीय निकायों, गैर-सरकारी संगठनों, सीमेंट उद्योगों और समुदायों को शामिल कर एक राज्य स्तरीय परामर्श बैठक आयोजित करे। इसमें कचरा बीनने वालों और अपशिष्ट प्रबंधन में कार्यरत संगठनों को भी जोड़ा जाए।

हर घाटी या उपमंडल में अपशिष्ट प्रसंस्करण केंद्र बनाए जाने की भी मांग की गई है। भूमि आवंटन के लिए स्थानीय निकायों से समन्वय किया जाए और सीमेंट उद्योगों के साथ प्लास्टिक कचरे के निपटान के लिए सहयोग को पुन: शुरू किया जाए। साथ ही, मनरेगा, स्कूल ईको-क्लब और नागरिक समाज की भी भागीदारी सुनिश्चित की जाए। एचएनए ने कुल्लू के बंजार उपमंडल, बालीचौकी, तीर्थन, जिभी, सैंज जैसे क्षेत्रों में अपशिष्ट निपटान की चिंताजनक स्थिति पर विशेष ध्यान देने को कहा है, जहां बढ़ता पर्यटन और निर्माण कार्य स्थानीय पारिस्थितिकी और जल स्रोतों के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है।◆◆◆

शस्त्र और शास्त्र, दोनों धरातलों पर ध्वस्त पाकिस्तान

राकेश सैन

जैसा कि 'बाजीराव मस्तानी' फिल्म में सभी ने देखा कि पेशवाई के लिए साक्षात्कार के समय बाजीराव ने अपने तीर से मोरपंख का आकार कम कर अपनी 'शस्त्र और शास्त्र' के ज्ञान में पारंगता का प्रमाण दिया। उनका संदेश था कि मोर का पंख मुगल साम्राज्य है, इसकी जड़ पर प्रहार करो व अपने आप नष्ट हो जाएगा। अभी पाकिस्तान के साथ हुए टकराव के समय भी भारत ने 'शस्त्र और शास्त्र' दोनों धरातलों पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। शस्त्र के धरातल पर तो सभी जानते हैं कि कैसे भारत ने पाकिस्तान में स्थित आतंकी अड्डों को ध्वस्त किया, वहां की वायु रक्षा कवच को तहस नहस करते हुए अपनी अचूक नभ सुरक्षा व्यवस्था का परिचय दिया लेकिन इसके साथ-साथ हमने पाकिस्तानी सेना अध्यक्ष जनरल मुनीर द्वारा अलापे गए धर्म के नाम पर दो राष्ट्र के सिद्धांत को भी धराशायी कर दिया।

सन 1817 में पैदा हुए मुस्लिम विद्वान सर सैयद अहमद खान ने अंग्रेज सरकार के सामने यह सिद्धांत दिया था कि मुसलमान एक अलग राष्ट्र हैं। उनका यही विचार आगे चल कर दो राष्ट्र सिद्धांत बना जिससे 1947 में धर्म के नाम पर देश का विभाजन हुआ। कट्टरपंथ, जनूनी हिंसा और हमारे नेतृत्व की कमजोरी के चलते चाहे भारत ने धर्म के नाम पर हुए इस बंटवारे को स्वीकार कर लिया परन्तु वैचारिक धरातल पर यह कभी नहीं माना कि पूजा पद्धति अलग होने से किसी की राष्ट्रीयता अलग हो जाती है। भारत की युगों से अवधारणा रही है 'एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात ईश्वर एक है, पर विद्वान उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। इसी विश्वास के कारण ही हम 1947 में हुए विभाजन को अप्राकृतिक व ईश्वर की इच्छा के विपरीत मानते हुए पुन: अखण्ड भारत की बात करते हैं।

लेकिन पिछले महीने 17 अप्रैल को पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष जनरल सैयद असीम मुनीर ने सैयद अहमद खान के उस विषाक्त द्वि-राष्ट्र सिद्धांत को एक बार फिर दोहराया। उन्होंने कहा कि 'इसके पीछे मूल विचार यह है कि मुस्लिम और हिन्दू दो अलग-अलग राष्ट्र हैं।' मुनीर ने ऐबटाबाद के काकुल में पाक सैन्य अकादमी में पासिंग आउट परेड को सम्बोधित करते हुए कहा, 'द्वि-राष्ट्र सिद्धांत इस मौलिक विश्वास पर आधारित है कि मुसलमान और हिन्दू एक नहीं, बल्कि दो अलग-अलग राष्ट्र हैं। मुसलमान जीवन के सभी पहलुओं जैसे धर्म, रीति-रिवाज, परम्परा, सोच और आकांक्षाओं में हिन्दुओं से अलग हैं।' जनरल मुनीर सम्बोधित चाहे पाकिस्तानी रंगरूटों को कर रहे थे परन्तु उनकी चिट्ठी का पता भारतीय मुसलमान थे। याद करें कि यह लगभग वही समय था जब भारत में कुछ छद्मधर्मनिरपेक्ष दलों की तुष्टिकरण की नीति के चलते वक्फ बोर्ड अधिनियम में संसद द्वारा किए गए संशोधन के कारण यहां मुस्लिम भावनाएं भडक़ी हुई थीं।

इस दौरान बंगाल में साम्प्रदायिक दंगे भी हुए जिसमें कई निर्दोष हिन्दुओं ने जानें भी गंवाई और अपमान भी झेले। जनरल मुनीर ने ऐसे संवेदनशील मौके पर आंच में भूसा झोंकने का काम करते हुए भारत के मुसलमानों में फिर से द्वि-राष्ट्र सिद्धांत स्थापित करने का कुत्सित प्रयास किया। यह वैचारिक विमर्श स्थापित करने का प्रयास किया कि हिन्दुओं के चलते भारत के मुसलमान चैन से नहीं रह सकते। कहने का भाव कि पाकिस्तान ने आतंकी हमले के रूप में 'शस्त्र' और द्विराष्ट्र सिद्धांत के रूप में 'शास्त्र' दोनों धरातल पर हमले किये। लेकिन भारत ने 'शठे शाठ्यम समाचरेत' अर्थात् जैसे को तैसा नीति पर चलते हुए दोनों हमलों की धार को पूरी तरह कुन्द कर दिया। भारत ने दुश्मन पर शस्त्र से आघात तो किया ही साथ में आपरेशन सिंदूर की जानकारी देने के लिए जिन दो महिला सैन्य अधिकारियों विंग कमाण्डर व्योमिका सिंह व कर्नल सोफिया कुरैशी को जिम्मेवारी सौंपी गई वो भारतीय सांस्कृतिक एकता की परिचायक बनीं।

भारतीय समाज की एकता समझाने के लिए पाकिस्तानी जनरल मुनीर को एक कथा सुनाना चाहूंगा। गंधर्वों द्वारा दुर्योधन को बंदी बनाए जाने पर अपनी पारिवारिक कटुता भुला कर युधिष्ठिर ने भीम को आदेश दिया कि वह जाए और युवराज दुर्योधन को गंधर्वों से मुक्त करवाए। भीम द्वारा प्रश्न किए जाने पर युधिष्ठिर कहते हैं कि हमारे परिवार में चाहे सौ मतभेद हों परन्तु दुनिया के लिए हम भरतवंशी 'सौ और पांच' नहीं 'एक सौ पांच' हैं। इसी तरह लोकतांत्रिक व्यवस्था के चलते भारतीयों में सौ मतभेद हो सकते हैं परन्तु दुश्मन के लिए हम भी वही हैं 'वयं पंचाधिकम् शतम्।' ◆◆◆

...और खेल हो गया

दीपक वोहरा
पूर्व राजदूत

न संयुक्त राष्ट्र, न अमेरिका, न ईरान और न ही सऊदी अरब, कोई पाकिस्तान की सुन ही नहीं रहा। पाकिस्तान सपने में भी नहीं सोच सका कि उसके साथ क्या खेल हो गया।

सात मई, 2025 को इतिहास रचा गया। ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के आतंकवादी ठिकानों पर बेहद सटीक कार्रवाई कर डाली। हमले के कुछ घंटों बाद दो भारतीय महिला सैन्य अधिकारियों, एक हिंदू व एक मुसलमान, ने मीडिया को बताया कि हमने क्या किया है। विवाह और नारीत्व का प्रतीक 'सिंदूर' नाम महिलाओं के सम्मान और गरिमा की रक्षा के बारे में एक शक्तिशाली कथन है। हम अपने देश को भारत माता कहते हैं और जब पहलगाम में इसी मां की दो दर्जन से अधिक बेटियों के माथे का सिंदूर कुछ अमानवीय लोगों ने मिटा दिया, तो मां का रूप बदला और वह हाथ में खड्ग लेकर दुर्गा बन गईं।

हमने वैश्विक आतंकवाद के गॉडफादरों के मन में भ्रम पैदा कर दिया, जिससे वे हमारे जवाब की आशंका से डरने लगे। वे भ्रमित थे और परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की धमकियां देते रहे। हमने तब हमला किया, जब उन्हें उम्मीद नहीं थी। हमने आतंकिस्तान की छाती पर पल रहे सांपों को कुचलने के लिए बहुत अंदर जाकर हमला किया। हमारे कदम से एक दिन पहले छह मई को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने पाकिस्तान के अनुरोध पर बंद कमरे में बैठक बुलाई। पर इस्लामाबाद तब हैरान रह गया, जब सुरक्षा परिषद, जिसके स्थायी और अस्थायी सदस्यों को हमने पहले ही जानकारी दे दी थी, ने पाकिस्तान से लश्कर-ए-ताइबा की पाकिस्तान में मौजूदगी पर ही पूछ लिया। नोटिस टू एयरमैन (एनओटीएएम) जारी किए बगैर पाकिस्तान के मिसाइल परीक्षण पर भी सवाल उठा, तो पाकिस्तान की हेकड़ी निकल गई। यही नहीं, कई देशों ने पाकिस्तानी हवाई क्षेत्र का उपयोग करना बंद कर दिया। यूएन सुरक्षा परिषद ने पाकिस्तान की अर्जी खारिज करते हुए उसे द्विपक्षीय मामलों में भारत से बात करने के लिए कहा। सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष ने जब पहलगाम हमले की निंदा की और जवाबदेही की मांग की, तो अपनी निराशा को छिपाने के लिए उसने आरोप लगाया कि सिंधु जल संधि को निलंबित करना अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है।

यह हमारा पहला कदम था, जो आने वाले महीनों में पाकिस्तान को गंभीर नुकसान पहुंचाएगा। गॉडफादर चीन खुद मुसीबत में है, इसलिए मदद करने में असमर्थ है। पाकिस्तान की दूसरी मुश्किल उसका सेना प्रमुख मुल्ला मुनीर है, जो मध्ययुगीन मानसिकता का इन्सान है। वह बलूचिस्तान में स्वतंत्रता सेनानियों से लड़ रहा है और हर हफ्ते अपने ही दर्जनों सैनिकों को खा रहा है। खैबर पख्तूनख्वा में वह तहरीक-ए-तालिबान से लड़ रहा है और उसकी सेना वहां लडने से इन्कार कर रही है। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ने दावा किया कि वह भारत को सबक सिखाएंगे और फिर विनम्रतापूर्वक हमसे कहा कि हम उनके देश पर दोबारा हमला न करें। वाशिंगटन में उनका राजदूत कहता है कि पाकिस्तान भारत जैसे अधिक मजबूत राष्ट्र से नहीं लड़ सकता। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त राष्ट्र वगैरह से गुहार लगाते फिरते रहे कि वे भारत से कहें कि वह उन पर हमला न करे। अमेरिकी विदेश मंत्री ने अपने पाकिस्तानी समकक्ष से बात करने के लिए जब फोन लगाया, तो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने उठाया और उनसे भी मदद मांगी। कुल मिलाकर पाकिस्तान में पूरी तरह से भ्रम और घबराहट है। एक दुष्ट सेना, मूर्ख सरकार और निराश लोग, चाणक्य के विनाश की शाश्वत रेसिपी हैं। खुद पर गोल करने के मामले में पाकिस्तान ने रिकॉर्ड बनाया है। प्रधानमंत्री मोदी ने अंग्रेजी में कहा था, ताकि दुनिया समझ सके कि भारत आतंकवादियों का पीछा करेगा और उन्हें दंडित करेगा। उन्होंने अपनी बात रखी।◆◆◆

देश में कृषि क्षेत्र कई समस्याओं से जूझ रहा है। इनमें लागतें लगातार बढ़ना व पैदावार घटती जाना प्रमुख चुनौती है। ऐसे में एआई और आईओटी तकनीकों का इस्तेमाल कारगर हो रहा है। इसमें खेती को लाभकारी व्यवसाय बनाने व किसान के लिए पर्याप्त आय सुनिश्चित करने की क्षमता है।

भारत को दुनिया में कृषि प्रधान देश के रूप में जाना जाता है जो खेती से अपनी विशाल आबादी की खाद्य आवश्यकताएं पूरी करता है। लेकिन देश में खेती करने वाले किसानों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। दरअसल, जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट और संसाधनों की सीमित उपलब्धता के चलते कृषि व्यवसाय को समस्याग्रस्त बना दिया है। ऐसे में खेती से जुड़े कार्यों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) का इस्तेमाल कृषि क्षेत्र में एक नई क्रांति ला सकते हैं। खेती में आईओटी तकनीक की मदद से खेतों में विभिन्न सेंसर लगाए जा सकते हैं, जो पहले बताई गई समस्याओं का समाधान करते हैं। ये सेंसर मिट्टी की नमी, तापमान, पीएच स्तर और पोषक तत्वों (एनपीके) की मात्रा को मापते हैं।

सेंसर से प्राप्त रियल-टाइम डेटा एआई मॉडल में जाएगा, जिसके जरिये किसान को जानकारी मिल सकेगी कि मिट्टी की स्थिति कैसी है और फसल को पानी या खाद की जरूरत कब है। इससे किसान फसल की सेहत को बेहतर समझ सकते हैं और समय पर उसे सही पोषण दे सकते हैं। सेंसर से प्राप्त डेटा के आधार पर तय किया सकता है कि खेत में कब और कितनी मात्रा में पानी देना है। इससे जल की बर्बादी रुकती है और फसल को जरूरत मुताबिक पानी मिलता है। इस तकनीक के प्रयोग से फसलों में लगने वाले रोगों और कीटों का प्रबंधन अब पहले से आसान हो गया है। पहले किसान तब तक इंतजार करते थे जब तक कि बीमारी पूरी फसल को नुकसान न पहुंचा दे। लेकिन अब एआई आधारित मोबाइल एप जैसे प्लांटिक्स और एग्रीबोट ने इस समस्या का समाधान कर दिया है। किसान फसल की फोटो अपलोड करते हैं, और ये ऐप तुरंत बीमारी का पता लगाकर उसका इलाज सुझाते हैं। इससे तुरंत समस्या के बारे में जानकारी मिलती है और समय पर इलाज संभव है। एआई और आईओटी तकनीकों की मदद से किसान मिट्टी की गुणवत्ता की जानकारी के आधार पर तय कर सकते हैं कि कौनसी फसल लगाना ज्यादा लाभदायक होगा।

आजकल कृषि में ड्रोन तकनीक का भी उपयोग बढ़ रहा है। ड्रोन की मदद से खेतों की निगरानी की जा सकती है। एआई-आधारित इमेज प्रोसेसिंग तकनीक का उपयोग कर किसान जान सकते हैं कि किस हिस्से में बीमारी फैली है या किन क्षेत्रों में अधिक खाद-पानी आदि चाहिये। इसके अलावा, माइक्रोसॉफ्ट और आईबीएम जैसी कंपनियां भी किसानों के लिए एआई-आधारित समाधान विकसित कर रही हैं।

हालांकि एआई और आईओटी खेती के क्षेत्र में बड़े बदलाव ला सकते हैं, लेकिन अब भी कई चुनौतियां बनी हुई हैं। छोटे किसानों की स्मार्टफोन और इंटरनेट तक सीमित पहुंच है। इसके अलावा, एआई और आईओटी आधारित उपकरणों की शुरुआती लागत काफी ज्यादा है, जो छोटे और सीमांत किसानों के लिए बड़ी बाधा बन सकती है। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और बिजली की समस्या भी एआई और आईओटी के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा बन सकती है। उनके लिए सब्सिडी, कम लागत वाले सेंसर और मुफ्त इंटरनेट कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान किये जाने की जरूरत है। इससे छोटे किसान भी आधुनिक तकनीकों का लाभ उठा सकेंगे। पूरी तरह से एआई और आईओटी को कृषि में लागू करने के लिए समय, धन और सही रणनीति की आवश्यकता होगी। इसके लिए सब्सिडी, प्रशिक्षण कार्यक्रम और तकनीकी सहायता जैसे उपाय अपनाए जा सकते हैं, ताकि हर किसान इन नवीन तकनीकों का लाभ उठाए और देश की कृषि उत्पादकता में इजाफा हो।◆◆◆

ऑपरेशन सिंदूर - भारत माँ का प्रतिशोध

सुनो, ये माँ के आँचल की गरिमा का ऐलान है,
हर सैनिक की साँसों में माँ का ही सम्मान है।
जिन आँखों ने देखे थे पिंजरों में अपनों के स्वर,
अब वही आँखें बन गईं हैं धधकते अंगारों का ज्वर।
भारत माँ की बेटी अब आँसू नहीं बहाएगी,
जो माँ की इज़्ज़त लूटेगा, उसकी दुनिया जलाएगी।
भारत ने जब प्रतिज्ञा ली—' अब और नहीं सहेगा देश',
शौर्य ने करवट ली, जागा वीरता का अदम्य वेश।
ऑपरेशन सिंदूर नारा नहीं, यह युग का उद्घोष है,
जिससे काँप उठी सीमाएँ, दुश्मन में भी रोष है।
ये सेना नहीं केवल, माँ के आँचल की आग है,
हर कदम पर मिट जाने को तैयार हर भाग है।
जवाब था ये बलिदानों का, जो चुप थे अब बोले,
शौर्य की भाषा में, बारूद में, ना मनुहारों में डोले।
भारत माँ ने रचा इतिहास, आँचल में ज्वाला बाँधी,
दुश्मन की धरती पर वीरों ने ललकार की गाँठ बाँधी।
जो आँख उठी माँ पर, वो अब धूल चाटती है,
भारत की शक्ति अब सीधे रण में बात करती है।
जय हिन्द, जय सैनिक, जय माँ का ये प्रतिशोध,
ऑपरेशन सिंदूर है भारत की शपथ का अमर बोध।

रमा ठाकुर, शिमला, हि.प्र.

◆◆◆

युद्ध में अच्छा बुरा नहीं दिखता

गीदड़ की जब मौत है आती
उसको शहर की ओर है भगाती
खून से रंगे है जिन आतंकियों के हाथ
चैन की नींद उनको भी कहाँ आ पाती
निरीह लोगों का करके संहार
मज़हब का नाम लेकर रहे थे मार
कौन सा मजहब सिखाता है ऐसा
बेकसूर लोगों पर करो तुम अत्याचार
आकाओं की सोचने की शक्ति रही नहीं
मति गई है उनकी मारी
बुद्धि इनकी हर ली आतंकवादियों ने सारी
युद्ध तो युद्ध है लेता है किसी की भी जान
मज़हब नहीं देखती मिसाइल सबकी आती है बारी
युद्ध में अच्छा बुरा नहीं दिखता
न ही जीत कर कोई बन जाता है महान
बलि चढ़ जाती है बेकसूर प्राणियों की
सैनिक ही नहीं मरते तबाह हो जाता है इंसान

रवींद्र कुमार शर्मा, घुमारवीं जिला बिलासपुर हि प्र

◆◆◆

सम्मान : जो लिया नहीं, कमाया जाता है

'**सम्मान**' — एक छोटा-सा शब्द, लेकिन इसका वज़न इतना भारी होता है कि जीवन की पूरी दिशा तय कर सकता है। यह वह चीज़ है जिसे न खरीदा जा सकता है, न छीना जा सकता है — इसे तो बस अर्जित किया जाता है, अपने कर्मों, विचारों और व्यवहार से।

हमने देखा है कि समाज में अक्सर सम्मान को पद, पैसा या रुतबे से जोड़कर देखा जाता है। कोई बड़ी कुर्सी पर बैठा है, तो उसे सम्मानित मान लिया जाता है, लेकिन क्या वाकई यह सम्मान होता है या बस औपचारिकता, डर या स्वार्थ की चुप्पी?

सच्चा सम्मान कभी थोपा नहीं जाता
वह दिलों से निकलकर आता है।

जो व्यक्ति दूसरों की बात को ध्यान से सुनता है, जो छोटे-बड़े सभी को बराबरी का मान देता है, जो गुस्से के बजाय समझदारी से जवाब देता है — वही सच में सम्मान के योग्य होता है।

सम्मान वह होता है जो व्यक्ति की गैर-मौजूदगी में भी उसके लिए महसूस किया जाए। जो आपकी अनुपस्थिति में भी आपके बारे में अच्छा बोले, वही असली सम्मान है, यह वो सुगंध है जो तब भी महकती है जब शब्द नहीं बोले जाते।

सम्मान तो तब होता है जब कोई आपको देखकर मुस्कुराए, आपके आने से माहौल हल्का हो जाए, और आपकी सादगी ही आपकी पहचान बन जाए। जो खुद को बड़ा नहीं कहता, वही असल में बड़ा होता है। क्योंकि जो लोग सम्मान पाने की होड़ में नहीं रहते, वो अपने काम और स्वभाव से खुद-ब-खुद लोगों के दिलों में जगह बना लेते हैं।

गर्मी में शरीर रहेगा शीतल

सोर्स : राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ के सदस्य एवं गुरु वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी

प्रकृति ने हर मौसम के हिसाब से विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाए हैं। इनका सेवन करके हम स्वस्थ और ऊर्जावान रह सकते हैं। हर मौसम में आने वाले फलों और सब्जियों की यह विशेषता होती है कि वे उस मौसम में होने वाली विभिन्न शारीरिक समस्याओं से राहत दिलाते हैं। गर्मी के दिनों में आने वाले मौसमी फलों और सब्जियों में जल की मात्रा काफी अधिक होती है। इनके सेवन से शरीर के लिए आवश्यक बहुत से पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। गर्मी में ऐसे खाद्य पदार्थ लेने चाहिए, जिनमें जल की मात्रा अधिक हो और शरीर को पोषण मिले।

गर्मी में भुने चने और जौ को मिलाकर बनाए गए सत्तू का सेवन करना बहुत लाभदायक होता है। इसमें सेंधा नमक या काला नमक और भुना हुआ जीरा डालने से शरीर को काफी आराम मिलता है। सतू को पेय के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर मीठा सत्तू खाना चाहते हैं तो शक्कर की जगह गुड़ का प्रयोग करना चाहिए। सत्तू के सेवन से शरीर के लिए आवश्यक कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, कैल्शियम और कई विटामिंस प्राप्त होते हैं। सत्तू के सेवन से लू लगने की संभावना काफी कम हो जाती है साथ ही शरीर में जलीय अंश संतुलित रहता है।

गर्मी के मौसम में प्याज का सेवन बहुत लाभकारी माना गया है। हालांकि इसका सेवन कच्चे अर्थात सलाद के रूप में ही करना चाहिए। भूनने से इसके पोषक तत्वों में कमी आ जाती है। इसके सेवन से लू लगने की संभावना नहीं रहती है। इसके साथ ही इसमें मिलने वाले कई पोषक तत्व शरीर को गर्मी से राहत दिलाते हैं। प्याज शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता वृद्धि में बहुत कारगर है।

खरबूजा का सेवन न केवल गर्मी से राहत दिलाता है, बल्कि लीवर के लिए भी लाभकारी होता है। तरबूज का सेवन भी शरीर के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है, क्योंकि इसमें जल की मात्रा काफी अधिक होती है। बस एक बात का ध्यान रखें कि इनका सेवन करने के पश्चात पानी नहीं पीना चाहिए। तरबूज में प्राकृतिक रूप ने नमक, कैल्शियम और अन्य पौषक तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं।

आजकल के मौसम में कच्चे **आम का पना बनाकर पीना** भी गर्मी से छुटकारा दिलाता है। पना शरीर को अंदर से शीतल रखने में मदद करता है। इसलिए इन दिनों पना का सेवन अवश्य करना चाहिए। अगर मीठा पना पीना है तो शक्कर की जगह गुड़ प्रयोग करना चाहिए। इसमें पुदीना व भुना जीरा डालने से इसके गुणों में काफी वृद्धि हो जाती है।

हर मौसम में नींबू का किसी भी रूप सेवन स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी होता है। इसके सेवन से लू लगने की आशंका कम हो जाती है साथ ही दस्त आदि से भी राहत मिलती है। नींबू में मिलने वाले विटामिंस और अन्य पोषक तत्व ब्लड प्रेशर की समस्या से छुटकारा दिलाते हैं। चाहे लो ब्लड प्रेशर हो या हाई नींबू शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है। इसका सेवन हृदय के लिए बहुत लाभकारी होता है साथ ही यह रक्त को साफ करने का काम करता है और शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा को बढ़ाता है।

गर्मी में दही और छाछ का सेवन भी बहुत लाभकारी माना जाता है। हालांकि एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि दही में नमक मिलाकर नहीं खाना चाहिए। सादा दही खा सकते हैं या फिर इसे गुड़ के साथ खाना चाहिए। इससे इसके पोषक तत्वों में कमी नहीं हो पाती है। आप चाहें तो दही में पानी मिलाकर ले सकते हैं। छाछ में भुना हुआ जीरा और सेंधा या काला नमक मिलाकर पीना चाहिए। छाछ का सेवन गुड़ के साथ भी किया जा सकता है। इसका सेवन चाय की तरह करना चाहिए अर्थात एक-एक घूंट, एक साथ नहीं। अगर अर्थराइटिस की समस्या है तो ठंडा दही नहीं खाना चाहिए।

सनातन ज्ञान को मिली वैश्विक मान्यता

गीता और नाट्यशास्त्र

यूनेस्को 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल

भारत की प्राचीन और शाश्वत सभ्यता की दो अमूल्य धरोहर — 'श्रीमद्भगवद्गीता' और 'भरतमुनि का नाट्यशास्त्र' — अब वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रतिष्ठित हो गई हैं। यूनेस्को ने इन दोनों ग्रंथों को अपने 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल कर, सनातन संस्कृति के गहन ज्ञान और विश्वदृष्टिकोण को एक ऐतिहासिक सम्मान प्रदान किया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस उपलब्धि को हर भारतीय के लिए गर्व का क्षण बताया और कहा कि गीता और नाट्यशास्त्र को यह वैश्विक मान्यता मिलना भारत की समृद्ध संस्कृति, गहन दार्शनिकता और जीवन-दृष्टि को सम्मानित करना है। उन्होंने कहा कि यह दो ग्रंथ केवल धार्मिक या सांस्कृतिक धरोहर नहीं हैं, बल्कि मानव चेतना के स्थायी स्रोत हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता एक सार्वभौमिक ग्रंथ है, जो जीवन के मूलभूत प्रश्नों के उत्तर देता है —कर्तव्य क्या है, आत्मा क्या है, और जीवन का उद्देश्य क्या है। इसके संदेश समय और स्थान की सीमाओं से परे हैं और आज भी वैश्विक स्तर पर प्रबंधन, मनोविज्ञान, नीति और आत्मिक विकास में मार्गदर्शक बने हुए हैं।

नाट्यशास्त्र, जिसे विश्व का पहला नाट्यशास्त्रीय ग्रंथ माना जाता है, केवल रंगमंच और नृत्य का दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह भारतीय कलाओं, अभिव्यक्ति, सौंदर्यशास्त्र और समाज के नैतिक मूल्यों का दर्पण है। भरत मुनि द्वारा रचित यह ग्रंथ आज भी विश्व भर के रंगकर्मियों और कलाविदों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

यूनेस्को का यह रजिस्टर उन ज्ञान स्रोतों को संरक्षित करने के लिए है, जो विश्व सभ्यता की दिशा तय करते हैं। गीता और नाट्यशास्त्र का इसमें स्थान पाना इस बात का प्रमाण है कि सनातन संस्कृति का संदेश आज भी उतना ही जीवंत और प्रासंगिक है। यह उपलब्धि न केवल भारत की गौरवगाथा है, बल्कि वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को वैश्विक मंच पर पुन: स्थापित करने वाला क्षण भी है।◆◆◆

जीवंतता झलकती है भारत में

अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के उद्गार

प्रधानमंत्री मोदी लोकतांत्रिक दुनिया में सबसे लोकप्रिय हैं और उनकी अप्रूवल रेटिंग (लोकप्रियता) ऐसी है कि मुझे उनसे जलन होती है। मोदी एक टफ नेगोशिएटर हैं। वे हर अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत के हितों के लिए मजबूती से खड़े रहते हैं। मैं खुद कई बार इसका साक्षी रहा हूँ।

मैं दूसरे देशों में भी गया हूँ। वहाँ अक्सर एक तरह की नीरसता महसूस होती है, जैसे सब एक जैसे बन जाना चाहते हैं, बाकी दुनिया की नकल करना चाहते हैं, भारत ऐसा नहीं है। यहां एक जीवंतता है, एक अनंत संभावनाओं की भावना है। नए घर बन रहे हैं, नई इमारतें बन रही है और जीवन समृद्ध हो रहा है। भारत में मुझे ऊर्जा, उत्साह और सांस्कृतिक समृद्धता दिखाई देती है । मैं भारत की प्राचीन वास्तुकला की सुंदरता से, इतिहास और परंपराओं की समृद्धता से बहुत प्रभावित हूँ, लेकिन इसके साथ-साथ मैं भविष्य पर भारत की तेज नजर से भी बहुत प्रभावित हूँ। मुझे लगता है कि इतिहास और परंपरा के प्रति यह सम्मान और भविष्य के प्रति यह समर्पण भारत को ऊर्जा देता है।◆◆◆

सच्ची दोस्ती का उपहार

एक छोटे से गाँव में गुड्डू नाम का एक बालक रहता था। वह पढ़ाई में तेज नहीं था, लेकिन दिल का बहुत साफ और मदद करने वाला था। स्कूल में सभी बच्चे उससे दोस्ती तो करते थे, लेकिन जब मदद की ज़रूरत होती, तो गुड्डू ही सबसे पहले खड़ा मिलता।

एक दिन स्कूल में एक चित्रकला प्रतियोगिता रखी गई। गुड्डू को चित्र बनाना नहीं आता था, लेकिन उसका सबसे अच्छा दोस्त राहुल बहुत अच्छा चित्रकार था। प्रतियोगिता के दिन राहुल बीमार हो गया। गुड्डू ने देखा कि राहुल उदास है क्योंकि वह प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं ले सकता।

गुड्डू ने चुपचाप उसके लिए एक योजना बनाई। उसने राहुल के पुराने बनाए चित्रों को देखा, उनसे प्रेरणा ली और अपनी पूरी कोशिश से एक चित्र बनाया। चित्र उतना अच्छा नहीं था, लेकिन उसमें एक संदेश था —'दोस्ती सबसे बड़ा उपहार है।' जब चित्र दिखाया गया, तो जजों ने उसकी सादगी और भावना को सराहा। गुड्डू को पहला पुरस्कार मिला, लेकिन उसने वह पुरस्कार मंच से ही राहुल को दे दिया।

सब दंग रह गए, और तालियों की गूंज उठी। उस दिन सभी बच्चों को एक बड़ा पाठ मिला —असली जीत दूसरों की खुशी में अपनी खुशी ढूँढना है।◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. सूरज किस दिशा से उगता है?
   (क) पूर्व (ख) दक्षिण (ग) उत्तर (घ) पश्चिम
2. कौन-सा पक्षी सबसे तेज उड़ता है?
   (क) कबूतर (ख) तोता (ग) मोर (घ) बाज
3. इंद्रधनुष में कितने रंग होते हैं?
   (क) 5 (ख) 6 (ग) 7 (घ) 8
4. हमारे शरीर का कौन-सा अंग सोचने का कार्य करता है?
   (क) हृदय (ख) आंख (ग) मस्तिष्क (घ) नाक
5. पंचतंत्र किस प्रकार की पुस्तक है?
   (क) इतिहास (ख) विज्ञान (ग) कहानियों की (घ) कविता की
6. पानी को ठंडा करने पर वह क्या बनता है?
   (क) भाप (ख) हवा (ग) बर्फ (घ) तेल
7. तिरंगे में बीच के सफेद रंग में कौन-सा चक्र होता है?
   (क) सूर्य चक्र (ख) अशोक चक्र (ग) चंद्र चक्र (घ) धर्म चक्र
8. कम्प्यूटर का जनक किसे कहा जाता है?
   (क) थॉमस एडिसन (ख) चार्ल्स बैबेज (ग) न्यूटन (घ) आइंस्टीन
9. जल से चलने वाला जीव कौन है?
   (क) सिंह (ख) कुत्ता (ग) मछली (घ) गधा
10. पेड़ हमें क्या देते हैं?
    (क) मोबाइल (ख) कपड़े (ग) ऑक्सीजन (घ) सोना

उत्तर : 1. (क) पूर्व 2. (घ) बाज 3. (ग) 7 4. (ग) मस्तिष्क 5. (ग) कहानियों की 6. (ग) बर्फ 7. (ख) अशोक चक्र 8. (ख) चार्ल्स बैबेज 9. (ग) मछली 10. (ग) ऑक्सीजन

चुटकुले

छात्र : सर, मेरा तो पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता!

गुरुजी : तो बेटा, मन लगाकर पढ़ लो...
फिर मनचाही जगह नौकरी लग जाएगी!

संदेश : पढ़ाई में मन लगाओ, ताकि जीवन में मेहनत कम हो।

◆◆◆

माँ : बेटा मोबाइल छोड़कर किताब पढ़!

बेटा: माँ, इसमें भी तो बुक है —'फेसबुक'

संदेश : असली किताबों में असली भविष्य छुपा है। ◆◆◆

छात्र : पापा, मुझे गणित बहुत मुश्किल लगता है। **पापा :** बेटा, जिंदगी का हिसाब-किताब भी गणित से ही चलता है!

संदेश : गणित ही नहीं, जीवन के हर विषय की अहमियत है। ◆◆◆

बच्चा : मम्मी, मुझे स्कूल नहीं जाना!

माँ : क्यों बेटा? **बच्चा :** क्योंकि टीचर कहती हैं, 'जो गलती करता है वो जानवर होता है' और मैं इंसान हूँ!

संदेश : गलती इंसान से ही होती है, लेकिन सीखना ही शिक्षा का असली उद्देश्य है।

एसजेवीएन
SJVN

विद्युत उत्पादन से राष्ट्र का सशक्तिकरण

हमारा साझा विजन

2040 तक 50000 मेगावाट

2030 तक 25000 मेगावाट

घरों, उद्योगों एवं अर्थव्यवस्थाओं के लिए स्वच्छ, विश्वसनीय एवं स्थाई ऊर्जा प्रदान करने में अग्रणी

एक सतत् एवं समावेशी भविष्य के लिए हमसे जुड़ें। आइए मिलकर प्राकृतिक ऊर्जा को अपनाएं, नवाचार को आगे बढ़ाएं और एक उज्ज्वल, हरित भविष्य का निर्माण करें।

पंजीकृत कार्यालय : शक्ति सदन, कारपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला–171006, हिमाचल प्रदेश (भारत)

सम्पर्क कार्यालय : ऑफिस ब्लाक, टॉवर–1, 6वीं मंजिल, एनबीसीसी कॉम्पलैक्स, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली–110023

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN LIMITED
(भारत सरकार एवं हिमाचल प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)
'नवरत्न सीपीएसई'

www.sjvn.nic.in
@Sjvnlimited @Sjvnlimited @sjvnlimited

कार्यालय	सेवा में
मातृवन्दना (मासिक) डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा, शिमला–171004, हिमाचल प्रदेश दूरभाष : 0177–2836990, मोबाइल : 7650000990	

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस – 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :